सौंझ जानि रावण वहां गयो भवन सकुचाय।
मयतनया पुनि आय त्यहि बहुबिधि कहाबुझाय॥
सो शठ कीन नेकु नहिं कानै। काल बिवश कैसे हित मानै॥
होत प्रात उठि सभा सिधावा। बैठ सिंहासन भय बिसरावा॥
इहाँ राम सब सचिव बुलाई। आयसु दीन चढ़हु गढ़ धाई॥
मुनि लंकेश ऋक्षेश कपीशा। चारि अनी कीन्हे दल कीशा॥
चहुँ दिशिते करिकै अति शोरा। लीन्हेनि घेरि लंक गढ़ घोरा॥
पूरुब दिशि नलनील सिधाये। दक्षिण द्वार बालि नृप जाये॥
मारुत सुत पश्चिम रणधीरा। सानुज उतर रहे रघुबीरा॥
बानर राज बिभीषण योधा। चहुँ दिशि रहे लेत पुर शोधा॥
यहि विधि भालु कीश भटबंका। लीन्हेनि घेरि लंक दै हंका॥
जैति राम जै लच्मण बोलहिं। चहुँदिशिलिये शैल द्रुमडोलहिं॥
दो० सुन्यो दशानन कपिन पुर घेरयो चहूँ दुवार।
अतिरिसलीन्हेउ बोलि तब निशिचरचमू अपार॥
कहेउ जाय कपि भालु सब गहिगहि डारहु खाय।
यों नहिं मनिहैं पाय मुख चढ़े नीच शिर आय॥
आयसु पाय चले तमचारी। शूल कृपाण परिघ बरधारी॥
पूरुब द्वार प्रहस्त पठावा। दक्षिण सुभट महोदर धावा॥
मेघनाद पश्चिम दरवाजा। उत्तर रहेउ दशानन राजा॥
बिरूपाक्ष मधि देशहि राखा। लीन्हे शोध रहै मृगशाखा॥
नारान्तकहि कह्यो चहुँओरा। लीन्हे शोध रह्यो बरजोरा॥
यहि विधि चहुँ दिशि सैन पठाई। दीन्हेसि युद्ध निशान बजाई॥
दो० इतते रजनीचर चमू उतते बानर रीछ।
चले धाय जय जय करत युगुल जैतिकी ईछ॥

सवैया ॥ इतते करि हूह निशाचर जूह समूह सुसंयुग पै बुटिगे । उतते कपि ऋक्ष चमूशर तीव्र सुबेल शरासनते छुटिगे ॥ तरु तोमर शैल त्रिशूल पवाँरत मारत घाय घने लुठिगे। भगवन्त सुजयजय कै रण में दल रावण राम द्वऊ जुठिगे॥ दुहुँओरते मारु कराल परी करि अद्भुत बीर रहे करणी। ललकारि प्रचारि भिरैं भट भुगड सुखंडित मुगड परैं धरणी॥ कहरैं भट घायल पुंजपरे बहिशोणित जाल चलींतरणी। भगवन्त महारण रोरमच्यो गति कौन कहै कवि सो बरणी॥ अतिक्रुद्ध सो बानर भालु बली रजनीचर सैनमें धायरले। भटकोटिन कोटि चकोटि बकोटन डारिकै भू धरिपायँमले॥ भय ब्याकुल भूरि निशाचर नीच सुपायकै बीच पराय चले। भगवन्त श्रिरामप्रताप प्लवंगन आरिनवंगन मारिदले॥ छन्द भुजंगप्रयात॥ चली यातुधानावली भागि कैसे। बली पौनके जोरते मेघ जैसे॥ पस्यो लंक हाहा भयो शोरभारी। रुदैं बालभामा सु हाहापुकारी॥ दियैं रावणै गारि तें खोरिडारी। जुकर्तें निलै राज मौतै हँकारी॥ बिचलते सुन्यो रावणासैन ज्योंहीं। कह्यो टेरिकै यातुधानौं से त्योंहीं॥ जुसंग्रामते पावँ पाछेक फेस्यो। सही बद्ध ताको भयो पानि मेस्यो॥ फिरे मानिकै ग्लानि तौ रैनिचारी। दुहूँ ओरते मर्ण साँचो बिचारी॥ सुलै अस्त्र शस्त्रादि नानाप्रकारे। महा युद्धकै भालु कीशौंकोमारे॥ त्रसे भालुकीशालि भागे पुकारी। सके एक एकैन संभारकारी॥ रह्यो द्वारपच्छे हनूमानयोधा। करैं तत्र संग्राम शक्रारि क्रोधा॥ टुटै द्वारना सो जुटे रैनिचारी। महा युद्धक्रुद्धे द्वऊबीरभारी॥ फिरी सैन्य कीशौं किसो श्रूयपायो। भयो क्रोध अत्यन्तही वायुजायो॥ प्रलयकालसों गर्जिदै हाँकधायो। फलंकामें एकै सुलंकापै आयो॥ लियो शैल उत्पाटि तौ एकभारी।

हन्यो धायकै मेघनादै प्रचारी॥ विभंज्यो रथै सारथी शत्रुपारयो॥ महा क्रुद्धकै तासुही लातमारयो॥ दुजे सूत बेहालसो देखिधायो। द्वि-ती स्यन्दनै घालि लंकाहि लायो॥ हनूमान तौ क्रोध कैकै अपारा॥ पिल्यो फेरिकै बीर लंका मझारा॥ सवैया॥ अंगद बातसुन्यो गढ़पै चढ़ि बातकोजात अकेलगयो है। त्यों भगवन्त सुबीर बड़ो तहँ आवत एक फलंकभयो है॥ युद्धसों क्रुद्धभगे द्वउवीर सँभारि श्रि-रामप्रताप लयो है। रावण भौनचढ़े द्वउ धाय कहाँ हय रावण हाँक दयो है॥ श्रीरघुवीर कि जयजय हाँकि लगे उतपात करै द्वउबंदर। दीनदहाय सकलसनिलै अवलोकि सभीतभयो दशकन्धर॥ हाय सुहायपरयो गढ़लंक जुभागि दुरे बहुहैं गिरिकन्दर। त्यों भगवन्त कहै छबि क्यों जनु क्रुद्धित सिन्धुमथैं दुइमन्दर॥ हरिगीतिका छन्द॥ पुर नारिवृन्द पुकारि रोवहिं हाय अबह्वै है कहा। उतपातके यइरूप दोऊ कीशभट आये महा॥ बलबिपुल इनको विदित घर घर सुभट नहिं इनसों जहाँ। अब कुशल नाहिंन अहय जीवन भागिकहु बचिये कहाँ॥

दो॰ कपिलीलाकरि तिनहिं बहु डरपावहिं द्वउधेरि।
रामनाम कहवाय मुख जानदेहिं तब फेरि॥

कवित्त॥ लीन्हे हेमखम्भन उखारि पुनि धारिकर दोऊ कपि बीरपरे कूदि रिपुदलमें। करि हरिनाद मनुजादन झपटिधारि प-टकत भूमिते फुटत बेलफलमें॥ फेंकत लँगूरनै लपेटि भट कोटि कोटि फटकत ठौरठौर परे जलथलमें। भाग्यवन्त बीर रणधीर त्यों युगुल कीश दीन्हे बिचलाय रिपुदल एकपलमें॥

दो॰ रिपु दल मारि बिहाल करि अंगद अरु हनुमन्त।
साँझ जानि आये तड़कि राजत जहँ भगवन्त॥

गये जानि अंगद हनू फिरे सकल कपि भालु।
चितय कृपा दृग श्रम बिगत कीन्हे राम कृपालु॥

छप्पै॥ फिरे भालु कपि जानि बहुरि निशिचर गण धाये। इतते कपिन बिलोकि पलटि रण सन्मुख आये॥ द्वउदल प्रबल प्रचारि सुभट महि संयुग जूटे। राम कृपा बल पाय कपिन निशिचरदल कूटे॥ निज हारि हेरि कायादि भट रचेन्हि असुर माया विकट। क्षण माहिं भयो अँधियार अति सूझन काहू कछु निकट॥ पुनि बरषे बहु लागि दुष्ट रुधिरोपल छारा। देखि निविड़तम पुंज भयो कपि दल खम्भारा॥ जानि राम सब मर्म कह्यो अंगद हनुमाना। सुनत चले अति क्रुद्ध सुभट दोऊ बलवाना॥ पुनि राम साजि शायक बृहद मार्यो रिपु दल दिशि तरल। मिटिगई तुरत माया न तम भवप्रकाश हरषे सकल॥ कवित्त॥ पायके प्रकाश कपि ऋक्षन बिगत त्रास धाये धुकि हरषि सुगिरितरु तूरिकै। हाँक हनूमान युवराजकी सुनत घोर भागे भटकौणप समर मुहँ मूरिकै॥ भाग्यवन्त जैतिजै पुकारि कपि दौरि धारि पटकि पछारि महि डारे बहु धूरिकै। मारिकै हटाय रिपु दल बिचलाय कीश आये रघुनाथ पै सकल मोद पूरिकै॥

दो० निशा जानि चारिउ अनी आये जहँ रघुबीर।
रामचन्द्र मुखचन्द्र लखि भये बिगत श्रम पीर॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे लङ्काकाण्डेप्रथमयुद्धकपिदलजयप्रासवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

दो० भवनिधि पारहि जानको वोहित जाको नाम।
भाग्यवन्त बन्दन करौं करि प्रणामि स्वइ राम॥
वहाँ सचिव सब बोलिकै पूंछ्यो निशिचर नाह।

अर्द्धकटक मार्‍यो कपिन कहहु करी अब काह॥
माल्यवन्त तब बचन मृदु बोला परम सुजान।
तात कहौं मत मैं कछुक करहु जानि हितकान॥
जबते श्रीमत जानकी हरिआन्यो हठितात।
तबते तुम्हरी एक नहिं परी पूरि कहुँ बात॥
अबहीं भलले जानकिहि जाइ देहु रघुनाथ।
जो चाहौ आपन कुशल कहौं सत्य दशमाथ॥
सुनि रिसाय रावण कह्यो कहा कहसि रे नीच।
करिया मुखकरि जाहि उठि नतुआयो तव मीच॥
कालंबिवश त्यहि जानिसो चला कहत दुरबाद।
सन्मुखआइ सदर्प तब बोला बच घननाद॥
प्रात पराक्रम तात मम देख्यो करिहौं जौन।
रिपु सन्मुख अबहीं कहा कहौं बरणि क्रमतौन॥
सो० सुनि सुत बचन भरोस पायो मन रावण परम।
होत प्रात करि रोस लागि गये कपि द्वार चहुँ॥

तोमर छन्द ॥ करि कोप तौ कपि धाय। गढ़ घेरि लीन्ह्यनि आय ॥ इतते तमीचर धारि। लिय दौरि क्रुद्धि प्रचारि ॥ अति होन लागयउ मार। दुहुँ ओरते चहुँद्वार॥ बहुभाँति आयुध पानि। गहि सौंह मारत तानि॥ कपि ऋक्ष बीर प्रचण्ड। गहि बृक्ष शैल निखण्ड॥ रिपु सैन ऊपर डारि। रघुबीर जैति पुकारि॥ गयपेलि निशिचर सैन। कपि भालु धै बलऐन॥ गहि पाँव कोटिन कोटि। पटके महीखल खोंटि॥ भय यातुधान बिहाल। सुनि मेघनादय हाल॥ चढ़ियान लै सँग नीच। रण आइगो त्यहि बीच॥ दय हाँक गर्ज्यउ घोर। कहँ दोउ भूप किशोर॥ कहँ नील औ नलबीर

शुभग्रीव है कहँ भीर ॥ कहँ बालि पुत्र लवार। कहँ बीर पौन कु-
मार॥ कहँ है त्रिभीपण द्रोहि। हठि आजु मारउँ ओहि॥ असहाँकि
सर्प समान। बहु लाग छाँड़न बान॥ लखि ठौर ठौरन ब्याल।
चले भागि बानरभाल॥ तब देखि भाजत कीस। हनुमंतकै अति
रीस॥ उतपाटि पर्वत एक। त्यहि धाय मार्‌यउ नेक॥ गिरि देखि
आवत सोइ। रथ सारथी दिय खोइ॥ भजि आपु ब्योम लुकान।
हनुमान मर्महिजान॥ इततें प्रचारत बीर। नहिं आवसो कपितीर॥
रघुवीरपै पुनि जाय। कटुबैन दुष्ट सुनाय॥ बहु अस्त्रशस्त्र प्रचारि।
रह्यो ब्योमते शिरडारि॥ रघुवीर आयुध तासु। किय काटि ति-
लसों आसु॥ अवलोकि पुंजप्रताप। निरलज्ज लज्यउ आप॥

दो० ह्वै लज्जित घननाद तब मायहि कीन प्रकाश।
बरषैलाग अँगार बहु शठ चढ़िजाय अकाश॥
जलधारा महिते विपुल भये प्रकट चहुँओर।
रटहिं पिशाच पिशाचिनी मारु काटु धुनिघोर॥
रक्त पीप विष्ठा उपल छार हाड़ कचधूरि।
बरषिकीन अँधियार अति सूझ न कछु ढिगदूरि॥

त्रोटक छन्द॥ अति ब्याकुल वानर भालुभये। तजि जीवन
की सब आशदये॥ करुणाकर राम सुजानहिये। मुसकाय शरा-
सन बाणलिये॥ शर एकहि मायहि कीनजुदै। तमपुंज यथा
दिनराज उदै॥ कृपया दृग वानर भालुलखे। सब त्रास विनाशहि-
ये हरखे॥ हरिगीतिका छन्द॥ तब राम आयसुपाय लक्ष्मण अं-
गदादिक कपिभले। लय साथ कटिकसि भाथ धनुशर हाथ रण
सन्मुखचले॥ तन गौर बाहुविशाल लोचनलाल नखशिख शो-
भहीं। भगवन्त अंग अनन्त छबि लखि कामकोटिन लोभहीं॥

दो० उतते रावण सुभट बहु दीन्हे बोलि पठाय।
अस्त्रशस्त्रलै विविधते सन्मुख पहुँचे आय॥
भूधर नख विटपायुधन धरि इत वानर भालु।
धाय लिये सन्मुख दुवन कहि जै रामकृपालु॥

नाराचछंद॥ भिरे प्रचारि बीरत्यों यथा सुयोग पायकै। अनेक अस्त्र शस्त्र डारि दीनमारि घायकै॥ सुमारि मुष्टिकानलात घात दांत काटहीं। प्रबल्ल भालु कीशधारि मारिफेरि डाटहीं॥ सुमारु मारु काटु काटु धारु धारुबोलहीं। महाबली सुराक्षसालि सौंहते न डोलहीं॥ परे अनेक भूमिरुंड हीनमुंड धावहीं। सुजैति जै पुकारि मुंड खान आस्य बावहीं॥ अनेक बीर घायले सुभांतियों बिराजते। मनो पलास बृक्ष फूलि जालशोभसाजते॥ रहेअनंत मेघनाद क्रुद्ध युद्ध कैद्धऊ। युगुल्लबीर बांकुड़े न पावजैति त्यों कऊ॥ करैअनेकभांति छल्ल बल्ल रैनिचारका। भयो सुक्रोधवंततौ अनंत अंत कारका॥ दल्योरथै तुरंग सूत मारिपुंज बाणनै। कियो बिकल्लशेष भूरि यातुधान प्राणनै॥

दो० मेघनाद तौ विकल ह्वै मनमहँ कीन बिचार।
परम सुभट यह लेन अब चाहत प्राण हमार॥
तब सकोप रावण सुवन बीरघातिनी सांगि।
हनि मोरेसि लच्छमण हृदय तेजपुंज सों लागि॥

लागत शक्ति परेउ महिबीरा। मुर्च्छितलखि आवा चलितीरा॥
हारे असुर उठाय अशेषा। जगदाधार उठै किमि शेषा॥
तब खिसियाय चल्यो बलवंता। त्यहि अवसर आयो हनुमंता॥
ताहि देखि उपजा अंतिक्रोधा। मारयो हनि मुष्टिक कपियोधा॥
परेउ भूमिकरि चरण प्रहारा। गहिपद बहुरि लंकपर डारा॥

सांझ जानि हनुमान अनंता। लाये जहँ राजत भगवंता॥
अनुज देखि प्रभु अति दुखमाना। तव करजोरि कह्यो हनुमाना॥
नाथ लषणहित शोच न कीजे। सोइविधिकरउँजोआयसुदीजे॥

कवित्त॥ कहियो निशेश गारि पट इव राघवेश अमृतचुवाय मुखज्यावों अहिनाथ ही। कहियो विबुध वैद्य आनौ गहि मारि मौत मेटौं दुख सबके सकल एक साथही॥ कहियो पतालपेलि दलि नाग अमीकुण्ड आनौ यहि ठांवसो उपारि निजहाथही। कहियो सुतनु त्यागि उठौं जागि घट शेष आयसु जु होयकरौं कृपा पाथ नाथही॥

सुनि हनुमान वचन रघुवीरा। हरषे सहित भालु कपिभीरा॥
जामवन्त तब कह सुनु रामा। वैद्य सुखेन रहत अरिग्रामा॥
पठवहु कोउ तेहि लाव तुरन्ता। आयसुपाय चल्यो हनुमन्ता॥
भवनसमेत सुखेनहि लायो। प्रभुपद बंदि सो वचनसुनायो॥

दो० द्रोणाचल ऊपर ललित अहै सजीवनिमूरि।
जाहु पवनसुत आपही लावहु वेगिहि भूरि॥
रामचरण उर राखिकै प्रबल प्रभंजन जात।
चल्यो सजीवनि हेतु पुनि सुमिरि रामजगत्रात॥
हालपाय यह रावणा कालनेमि पहँ जाय।
पठयो बनि सो कपटमुनि बैठ पंथ त्यहि आय॥

छप्पै॥ मारुतसुत मग जात लख्यो आश्रम शुभ सोई। कीन्ह्यो मन अनुमान अहैमुनिवर इतकोई॥ याच्यो जल ढिगजाय दीन सरसुभग बताई। पैठत पकस्यो पांव धाय मकरी दुखदाई॥ हनुमान ताहि मास्योतुरत गई गगनकहि मुनिसरस। पुनि असुरलँगूर लपेटि महिपटकि चल्यो हर्षित परम॥ कवित्त॥ देखि शैल सूखमा बिल

समान भांति भांति औषधी सुचारु यत्र मोदको निधानहै। रंग रंग वृक्षनललित बर बेलि फैलि छबि को सकेलि मैनतानि ज्यों बितान है॥ डोलत समीरत्यों त्रिबिध मंजु कोकिलालि बोलत भ्रमरमाल जालकर गानहै। भाग्यवंत हेरिबहु बुद्धिपैन मूरितव सहसा उपारि द्रोण लीन्ह्यो हनुमानहै॥

दो०· गहि गिरि रातिहि गगनपथ चल्यो बेगि कपिधाय।
अवधपुरी ऊपर जबहिं पहुँच्यो आय हहाय॥

बसंततिलका छन्द ॥· देख्यो सुव्योम पथ भारतदुष्ट जानी। मारयो बिहीनफर शायक तीब्रतानी॥ लाग्यो नराच परिमुर्च्छित राम भाख्यो। द्रोणाद्रि व्योम पवमान सुसाधि राख्यो॥ इंद्रवज्राछंद॥ सुन्तै सुबानी उठिभर्त धाये। यत्रांजनीजा तुर तत्रआये॥ उपेन्द्र बज्राछन्द॥ बिलोकि कीशै अति भे दुखारी। सुबानिबोले ढरिनैन बारी॥ सवैया॥ कायगिरा मन छांड़िछलै म्वहिं रामकेपायँन जो रति होई। त्यों भगवंत सुएक हिये गति जानतजान शिरोमणि ओई॥ होहिं प्रसन्न जु मोपर आजु कृपाकर राम सुसाहेब सोई। तौ उठि बैठहु कीशअबै श्रम शायकशूल सबै तनखोई॥

सो० सुनत भरतके बैन श्रवण सुखद सांचे सरल।
कहि जै राजिव नैन उठि बैठ्यो मारुत सुवन॥

सवैया॥ लीन लगायहिये हनुमानहि भारतपुंज प्रमोदहिछाये। प्रीति पुनीत अपार हिये न समात उभै भरिलोचन आये॥ तात कहौ कुशलातभली सिय सानुजराम न हालहिपाये। त्यों भगवंत श्रिरामचरित्र समास सबै कपि गाय सुनाये॥ हरिगीतिकाछन्द॥ सुनिराम सिय सुधि भरत व्याकुल नयन युगजल छायऊ। हादैव मैं कृतजयउँ जग प्रभु काज एकन आयऊ॥ पुनिजानि कुसमय

धीरधरि बलबीरयों कपिसन भणी। चढ़ि मामशायक तात वेगिहि जाहु जहँ रघुकुल मणी॥ सुनि भरतके इमिवचन उपज्यो गर्वमन हनुमानहै। अस बीरको चलि सकिहि मोरे भार ज्यहिकर बानहै॥ प्रभु प्रभाव पुनिसमुझिकपीशा। बोला वचन चरणधरि शीशा॥ तव प्रताप उर राखि कृपाला। जैहौं जहँ रघुपति यहिकाला॥ अस कहि नाथ रजायसु पाई। लै गिरि चल्यो पवनसुत धाई॥ इहां देखि अनुजहि रघुबीरा। बोले नर इव बचन अधीरा॥

॥ सवैया ॥ तात स्वभाव त्वया मृदुमोहिं सकौ न कबौ दुख दीन निहारी। मोंहित लागि तज्यो पितु मातु सह्यो बन आय सुसंकट भारी॥ त्योंभगवन्त कहां अब सो अनुराग ह्वै वह आनँदकारी। जो नहिं होत खड़े उठिकै लखि ब्याकुलता अति आजु हमारी॥ ज्यों खग पंखबिना अति दीन भुवंग बिन.मणि ब्याकुल जैसे। जीवन बंधु मया बिनु तोहिं जियावहि जो जड़दैव है तैसे॥ जैहहुँ औधमुहैं क्यहि लै हित नारि गँवाइ सुभाइहि ऐसे। त्यों भगवन्त सँभारि सनेह उठौ किन तात पर्यो महि कैसे॥ प्राणप्रिया सुत अंबहि तात सु सौंप्यसि मोहिं तुम्हें गहि पानी। देहहुँ जाय कहा त्यहि उत्तर जीवन जासु तुम्हें सुखदानी॥ देखि महा यह संकट मोहिं सिखावत क्यों उठि बेगि न आनी। मैं बिनु तोहिं जियों पल ना यक तात पुकारि कहौं फुँरि बानी॥

दो० सुतवित नारि सुधाम धन पुनिपुनि ह्वै जगजात।
पै भगवन्त न बिछुरि फिरि मिलत सहोदर भ्रात॥

सो० असबिचारि जियतात चतुरशिरोमणि मृदुसुचित।
उठहु बेगि सुखदात सुठि सनेह संभारि मम॥
नर इव राम कृपालु करत बिलाप अनेक बिधि।

सुनतसकल कपिभालु भयेमगन करुणाजलधि ॥
त्यहि अवसर हनुमंत आइगयो शुभ मूरिलै।
हरषि मिले भगवन्त परम प्रीति उर लायकै ॥

छप्पै ॥ कीन्ह्यो वैद्य उपाय तुरत बैठे उठि शेषा । भेंट्यो अनुजहि राम मुदित कपिभालु अशेषा ॥ पहुँचायो गिरि वैद्य हनू जहँते जिमि ल्यायो । देखि सुभट बलवंत परम रघुपति मन भायो ॥ श्री राम चरित अद्भुत परम को जानै कवका करत । नित गाय गाय भगवन्त स्वइ परमानँद उरमें भरत ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्म्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेलङ्काकाण्डेलक्ष्मणाह्वितरामविरहहनुमानसजीवनीगृहीतागमनवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

दो० परब्रह्म परमातमा पूरण विश्वाबीश ।
भाग्यवन्त श्री राम पद पद्म नवावों शीश ॥

जेहि विधि लषणहि रामजियाये । सो बृतान्त सुनि रावण पाये ॥
ह्वै अति विकल दशानन बीरा । आवा कुम्भकरण के तीरा ॥
बहु उपाय करि ताहि जगावा । पूँछेसि सब बृत्तांत सुनावा ॥
निशिचर सुभट जिते बल भारे । तात कपिन सो सब संहारे ॥
कुम्भकरण बोला सुनि बानी । कीन्ह्यो तात परम निजहानी ॥
जक्त मातु सीतहि हरि आन्यो । पूरण ब्रह्म न प्रभु पहिंचान्यो ॥

दो० अब चाहत कैसे कुशल बेसह्यो काल कराल ।
प्रथमें तात न आय किन मोहिं जनायो हाल ॥
ताते अब भरि अंक मोहिं लेहु भेंटि तुम तात ।
जाय करौं लोचन सफल देखि श्याम मृदुगात ॥

रोलाछन्द ॥ तब रावण बहु ताहि महिष मदिरा मँगवाई । दीन्हेंसि अशन कराइ भयो मदमस्त अघाई ॥ गरज्यो घोर कठोर

चल्यो रिपु सन्मुख धाई। देखि बिभीषण भाय मिल्यो आगे तेहि आई॥ करि प्रणाम करजोरि सकल निज हाल सुनायो। सुनि बहु ताहि सराहि बहुरि प्रभु पास पठायो॥ कह्यो बिभीषण आय सपदि सुनियो रघुबीरा। कुम्भकरण रिपु भाय सुभट आवत रण-धीरा॥ सुनि सब बानर भालु चले गिरितरु धरिधाई। डारेन्हि एकहिबार तासु ऊपर लै आई॥ बरषत सुमन समान जानि धायो मुखबाई। धरिधरि भक्षण लाग भालु मर्कट समुदाई॥ श्रुति नासा मुख बाट निकरि भागहिं कपि कैसे। गिरिवर गुहा बिहाय बिपुल टीड़ीगण जैसे॥ कोटिन पटकै भूमि पकरि कोटिन तन मर्दै। कोटिन लीन्हे खाय मेलि कोटिन दिय गर्दै॥

दो॰ कुम्भकरण मदमस्तयों मर्दत बानर भालु।
जाय दीख शोभासदन आगे राम कृपालु॥
करि प्रणाम मनहीं मनहिं भरि लोचन छवि हेरि।
बोला बचन सक्रोध तब कुम्भकरण अस टेरि॥

भुजङ्गप्रयात॥ न हौं ताड़ुका शुभ्रबाहू हौं मैनी। न हौं शम्भु कोदण्ड मारीच पैना॥ न हौं खर्न दूषन्न त्रैशिर्न बाली। अहौं कुम्भकर्णाख्य मैं शत्रुशाली॥ करौ राम संग्रामको आय मोसो। पुजौ काम आयोहितै जासु सोसो॥ यसुन्तै हनूमन्त कै कोपधायो। हन्यो मुष्टिका ताहि भूभूमि आयो॥

पुनि सम्भारि उठा बलवन्ता। मारेसि घूर्मि परा हनुमन्ता॥
नलनीलहिगहिअवनिपछारेसि। कांखदाबिकपिराज सिधारेसि॥
डारेसि पटकि अनेकन बानर। चले भागि टेरत करुणाकर॥
मुरछा बिगत समीर कुमारा। जागि कीन सुग्रीव सँभारा॥
बीच पाय सोउ निकरत भयऊ। काटि श्रवण नासान्भगयऊ॥

काटे श्रवण नासिका जानी। फिरा मानि मन परम गलानी॥
कीन्हेसिकपिदल मारि बिहाला। काहुन रहा धीर तेहि काला॥
दो० सहज भयावन रूप तेहि पुनि श्रुति नासा हीन।
उपज्योकपिदल त्रास लखि चहतग्रासजन्तु कीन॥
सजि शारंग कृपायतन तब छांड़े शर लक्ष।
चले शत्रु सन्मुख मनहुँ काल व्याल युत पक्ष॥
क्षण महँ सकल निशाचर सैना। डारेनि काटि राम शर पैना॥
कुम्भकरण तब करि रिस भारी। प्रभुदिशिचल्यउशैल करधारी॥
राम भुजासो खण्डन कीन्हा। तबल्यहिबामपाणि गिरिलीन्हा॥
सोउभुजमहि प्रभु काटि गिरावा। तब पसारिमुख करि रिसधावा॥
तब प्रभु बिलग कीन हतिशीशा। गिरा जाय आगे भुज बीसा॥
बिनु शिर भुज धावा चिकारी। करि युग खण्ड राम महि पारी॥
तासु मरण लखि सुर मुनि झारी। मुदित कहहिं जय राम खरारी॥
को कृपालु त्रिभुवन सम रामा। दीन्ह्योअसअधमहिंनिजधामा॥
दो० समरभूमि रघुवंशमणि राजत करुणा कन्द।
भाग्यवन्त शोभा निरखि मुदित भालु कपिवृन्द॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितभक्तिशिरोमणिग्रंथेलङ्काकाण्डेकुम्भकरणबधवर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः ५॥

दो० श्रीरघुनन्दन जानकी बंदौं पद शिरनाय।
जासु कृपा वारिधि अगम बिनु प्रयास तरिजाय॥
कुम्भकरण को शीश निहारी। दशमुख हृदय भयो दुखभारी॥
मेघनाद तेहि अवसर आयो। कहिबहुभांतिपितहिंसमुझायो॥
होत प्रात चढ़ि यान सिधावा। समरभूमि अतिआतुर आवा॥
प्रलय पयोद सरिस घहरांना। तर्जनलाग आयुधविधिनाना॥

इतते बानर भालु समूहा। धरि गिरि तरु धाये करि हूहा॥
होन युद्ध लाग्यो अति भारी। निजनिज प्रभु जै जैति पुकारी॥
मेघनाद बिरच्यो तब माया। रथ चढ़ि गयो गगन खलराया॥
अस्त्र शस्त्र बहु भांति चलायो। मारि दुष्ट बाणन झरि लायो॥
दो० गहि गिरि तरु बानरनिकर धावहिं तरकिअकास।
जब नहिं देखहिं ताहि फिरि आवहिं परमउदास॥

सवैया॥ रावणको सुत बीरबली कपि भालुन मारिकै ब्याकुल कीन्हें। छूटिगये धृत धीरनके हनु अङ्गद आदि जिते भट चीन्हें॥ मारिकै बाण त्रिशूल कृपाणन आयुध पाटि दशौदिशि दीन्हें। बोलतबैन कठोर महा पुनि आइ सु घेरि श्रिरामहिं लीन्हें॥

दो० नागफांस में बांधि पुनि लीन्हेंसि राम कृपालु।
प्रभु बंधन अवलोकि कै भये बिकल कपि भालु॥
जामवन्त लखि धाय तेहि हतिमहि दियोगिराय।
परम क्रोध पुनि गहिचरण दीन्ह्यों लङ्क बहाय॥
तब खगपति सब आइकै डारे पन्नग खाय।
बिगतत्रास कपि भालु लखि उठेसकल हरषाय॥
गहि गिरि नखबिटपायुधन लिये कपिन पुनिधाय।
देखत रजनीचर कटक ब्याकुल चले पराय॥
मेघनाद उत जागिकै तुरत गयो गिरि खोह।
करनअजय मख लागतहँ शठ निलज्ज रतद्रोह॥

हरिपद छंद॥ यह सुधि पाय बिभीषण प्रभु सों कह्यो जोरियुग पानी। मेघनाद मख करै अपावन सुरदावन अघखानी॥ जो प्रभु सिद्ध होन सो पाइहि बेगि जीति नहिं जैहै। पठवहु कीश जाय मखभंगें तब तंजिकै चलि ऐहै॥ सुनि रघुबीर बोलि लिय तुरतै

अङ्गद अरु हनुमाना। लक्ष्मण संग जाहु सब भाई करहु भंग मख ठाना॥

दो० तुमलक्ष्मण रण मेघ रव अवशिकिह्यो खलहंत।
प्रभु आयसु शिर राखिकै गवने तुरत अनंत॥
कीन्हे कपिन बिध्वंस मख अतिआतुर तहँ जाय।
लै धनु शर घननाद तब धावा कपिन रिसाय॥
मारि शस्त्र व्याकुल कियो कपिन कहत दुरवाद।
रामानुज सन आय पुनि भिरयो प्रबल घननाद॥
अस्त्र शस्त्र छाँड़े बिपुल तिल सम काटे शेष।
निजबाणगन पुनिमारितेहि व्याकुल कियोबिशेष॥
बिबिध रूप धरि धरि असुर करैं समर बलवन्त।
जाने प्रबल रिपु लषण उर उपज्यो क्रोधअनंत॥

तब लक्ष्मण मारेउ शर एका। काटि तासु भुज लंकहिफेंका॥
पुनि धावा करि घोर चिकारा। तुरत लषण शर दूसर मारा॥
लागत बाण समेत सनेहा। राम लषण कहि छाँड़ेसि देहा॥
देखि देव नभ बरषहिं फूला। जयजय करहिंपरम अनुकूला॥
तब लक्ष्मंण रघुपति पहँ आये। सादर चरण कमल शिरनाये॥

दो० दशकंधर सुनि सुवनबध कीन्ह्यो बिपुल बिलाप।
नारि बृन्द रोवत निरखि समुझाई बहु आप॥

छप्पै॥ नाम सुलोचनि नारि तासु अतिशय छबिराशी। पति भुज देखि सशोक शोच निज हृदय प्रकाशी॥ कलम दई कर तासु लषण कीरति लिखि दीन्हीं। पावन परम अपार निरखि अति रोदन कीन्हीं॥ पुनि सखिन सहित रघुबीर पहँ जाय माँगि शिर

मै सती। श्री राम कृपा घननाद प्रिय लही परम उत्तम गती॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहधर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे
लङ्काकाण्डेमेघनादवधवर्णनोनामषष्ठमोऽध्यायः ६॥

दो० मेघनाद जूझेउ जबहिं तब रावण स बिषाद।
कीन्ह्यो हृदय बिचारि निज अहिरावण को याद॥
तुरतहि सो आयो तहां कह्यो दशानन हाल।
बोला लै देविहि इन्हें देहौं बलि पाताल॥

सवैया॥ वेष बिभीषण को धरिकै अहिरावण बंधु द्वऊ हरिलायो। जाय पताल सु देविहि को बलिदेन हितै द्वउ ठाढ़ करायो॥ श्री हनुमान सुजाय तबै हति दुष्ट ससेनहिं धूरि मिलायो। त्यों भगवन्त श्रिरामहिं सानुज आनि समाजको शोक नशायो॥

दो० अहि रावणको नाश सुनि है रावण अति क्रुद्ध।
साजि सेन चतुरंग तब चला आपुहित युद्ध॥

सवैया॥ साजि चमू चतुरङ्ग अपार चल्यो रण रावण बाजन बाजे। पूरि रही नभ मण्डल धूरि सुप्राविट मेघ मनो दल साजे॥ गर्ब्ब गुमान भरे रजनीचर नाद करैं जनु केहरि गाजे। त्यों भगवन्त दशानन लै दल आइगयो रण संयुग काजे॥ धाय लिये कपि भालु बिशाल कराल ज्योंकाल महाबल पूरे। मानहुँ शैल सपक्ष बिराजहिं बृन्दन बृन्द अनूपम रूरे॥ आयुध दन्त नखाचल धारि प्रचारि चले तरु तालन तूरे। त्यों भगवन्त दुहूँ दिशिते कहि जैति सुजय निज जोरनि जूरे॥ मारु कराल मची रण मैं भट एकन एक जहाँ तहँ जूटे। अस्त्र सुशस्त्र अनेकन भांति सुआयुध जाल दुहूँ दिशि छूटे॥ मारि, पछारि उ-

खारि भुजा शिर फेंकि दिये नभ गृद्धन लूटे। कालकराल सों भालु बलीमुख पेलिकै सैन निशाचर कूटे ॥ शोणित पाणि भरे कपि भालु सक्रुद्ध महाबलवन्त बिराजैं। मर्दहिं सैन निशाचरकी करि केहरि नाद मनो घनगाजैं ॥ मारि चपेटन काटिकै दाँतन डाटि गिराइकै लातन गांजैं। देखत युद्ध प्लवंगनकी तजि धीरज धीर निशाचर भाजैं ॥ धाय धरैं पटकैं भट भूतल तोरि भुजा शिरव्योम चलावैं। फारहिं गाल बिदारि उरै पुनि आँतन काढ़िकै माल बनावैं ॥ रूपधरे नरसिंह मनो बहु आँगन युद्धमें खेल मचावैं। त्यों भगवन्त सुघोर गिरा रहिछाय तिहूँपुर ठाँवनठांवें ॥ तोमरछन्द ॥ बिचलात सैन सुदेखि। दशकण्ठ क्रुद्धि बिशेखि ॥ भुजबीस तौ दश चाप। गहि बीर धायउ आप ॥ लखि आवते दशशीश। उर माँझकै अति रीश ॥ उत पाटि पर्वत बृक्ष। लिय धाय बानर ऋक्ष ॥ यकबार ऊपर तासु। लयजाइ डारिन्हि आसु ॥ तिल सारिखे भय भंग। द्रुम शैल लागत अंग ॥ चहुँओर धै दशशीश। गहि लाग मर्दन कीश ॥ अवलोकि सो जिमि कालु। चले भागि बानर भालु ॥ सब त्राहित्राहि पुकारि। रघुबीर राम खरारि ॥ कपि भालु भागत जानि। दशचाप शर संधानि ॥ सवैया ॥ तानिदशौ धनु शायक तीव्र दशानन कोपित पुंज पवाँरयो। लागहिंते हय पन्नग धाय रहे नभ छाय धरा दिशि चारयो ॥ भागि चले कपि भालु भयातुर सेन समूह कलाहल पारयो। आरत बैन पुकारत रामहिं रक्षहुनाथ दशानन मारयो ॥ भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ बिचलते चमू कीश देख्यो सु ज्योंहीं। चल्यो साजि शारंग सौमित्र त्योंहीं ॥ रहे नीचका मारि तैं कीश भालू। बिलोकै इतै मोहिं मैं तोरकालू ॥ तोटकछन्द ॥ सुनि रावण तौ अस कोपि कह्यो। सुतघातक खो-

जत तोहिं रह्यो ॥ अब आजु निपाति त्वही डरिहौं । रण माहिं सुशीतल ही करिहौं ॥

दो० अस कहि रावण कोप करि मारेउ बाण प्रचण्ड ।
तुरत लषण सो काटिकै करिडारे युग खण्ड ॥

कवित्त ॥ कोटिन कराल किये आयुध प्रहार खल तिल सों लषण काटि डारे एक हाथही । फेरि निज बाणन प्रहार करि शेष तासु स्यन्दन बिभंजि सूत मार्यो त्यहि साथही ॥ शत शत बाण पुनि बेधे दशौ शीश उर मारि शत बाण महिपार्यो दशमाथही ॥ कोप करि रावण वहोरि उठि ब्रह्मदत्त मार्यो सो प्रचण्ड शक्ति लागी अहिनाथही ॥ सवैया ॥ लागत शक्ति पर्यो महि बीर अनंत उठाय दशानन हार्यो । भूरि रही महिमा न उठ्यो बल सागर नागर कोशलवार्यो ॥ चौदह भूवन जो शिरपै भगवन्त यथा रजकी कण धार्यो । चाहत ताहि उठावन रावन मूढ़प्रभावन पुञ्ज बिचार्यो ॥ मोदक छन्द ॥ देखि दशा यह मारुतनंदन । आयउ धाय जहां जगबन्दन ॥ दौरि दशानन मुष्टिक मारयउ । भूमि रह्यो कपि भूमि न पारयउ ॥ मारयउ फेरि हनू दशकन्धर । भूमि पर्यो जनु घूर्मित मन्दर ॥ लै लषणै हनुमान सिधायउ । देखत राम महादुख पायउ ॥

दो० काल कठिन तुम कालके जग रक्षक बल ऐन ।
उठि बैठे लच्छमण तुरत सुनत राम मृदु बैन ॥

कवित्त ॥ साजि चाप शायक निषंग संग बानरालि क्रोधकै लषण शत्रु सौंह फेरि आयऊ । मारि पुञ्ज बाणन विभंजि यान सूत हति रावणै विहाल करि अवनि गिरायऊ ॥ दूसरे सुसारथी विलोकिकै विकल ताहि धाय घालि स्यंदनै सुलंक बेगि लायऊ ।

भाग्यवन्त राघवेश बंधु त्यों प्रताप पुञ्ज आयकै बहोरि स्वामि पायँ शीश नायऊ ॥
दशमुख उत मुरछा ते जागा। करनलाग कछु यज्ञअभागा ॥
सो सुधि कतहुं बिभीषण पायो। सपदिआय रघुपतिहिं जनायो ॥
तुरत कपिन पठये रघुराई। यज्ञ बिध्वंस किहिनि ते जाई ॥
तब सकोप रावण बल ऐना। रण सन्मुख आवा साजि सैना ॥
दो० यहां देवतन आइकै प्रभुसन बिनती कीन।
सुनिं सुरदुख रघुबंशमणि धनुप बाण कर लीन ॥
सवैया ॥ लै धनु शायक श्रीरघुनायक बांधि जटा शिर जूट सँवारे। श्यांम तमाल सों गात मनोहर लोचन शोक बिमोचन हारे ॥ आनन पूरणचंद उरायत बाहु बिशाल महाबल भारे। त्यों भगवन्त बिलोकि प्रभा झरि फूलन देवन जैति उचारे ॥ त्यहिं बीच निशाचर नीचचमू करिहूह सु सन्मुख आइगई। अवलोकत बानर भालु इतै करिक्रुद्ध बिरुद्धन धाइलई ॥ जुटिगे भट भूरि दुहूँ दिशि ते निज नाथनकी कहि जैति जई। भगवन्त उमंग भरे सब बीर प्रचारि पुकारिकै युद्धठई ॥ त्रिभंगी छंद ॥ रजनीचरधारी जनु घट कारी संघन डरारी घिरिआई। तरवारी चम्कैं चहुँदिशि झम्कैं दामिनि दम्कै जनुधाई ॥ गज बाजि चिकरहीं जनु रवकरहीं जलद घुमरहीं नभ घेरे। लंगूर बिराजैं जनु नभसाजैं धनुसुरराजैं बहुतेरे ॥ उड़ि धूरिअपारा जनु जलधारा बाण प्रहारा बुन्द घनो। दुहुँ दिशिन अपारै करत प्रहारै पर्वत पारैं बज्र मनो ॥ रघुबीर रिसाई शर झरिलाई रिपु समुदाई लागि मरैं। लागत तन तीरा चिकरहिं बीरा घुर्मि अंधीरा अवनिपरैं ॥ शोणित सरिधारा चली अपारा सुभट पहारा फोरिमनो। ध्वज फूल सजेता दल रथ रेता चक्र परेता

भवँरघनो ॥ जलजंतु समाना करिहरिनाना विविध बिधाना कौन गनै। करपद झखजारा केशसेवारा विपुल पसारा सुकबिभनै॥ शर शक्ति भुअंगा चाप तरंगा मगर निषंगा पट फेनू। कच्छप जनु ढाला विविध बिशाला कठिनकराला भयदेनू॥

दो० भूत प्रेत बैतालबहु मज्जहिं योगिनिमाल।
महायुद्ध रणमें मच्यो दोऊ दिशि विकराल॥

कवित्त ॥ धाय धाय कालसो कराल कपि भालुजाल वेष विकराल गहि यातुधान मारहीं। तोरि शीश बाहुन उखारि महिपारि भूरि लूमन लपेटि बहु सागर में डारहीं॥ काहूँ अनेक परे घायल बिकल वीर लोथिन अनेक लिये स्यार पेट फारहीं। भाग्यवंत झुंडन के झुण्डवितु मुंडरुंड धावहिं सुमुंड बहु जैजय पुकारहीं॥ लीन्हे कंक काकबहु बाहुन उड़ात नभ एकन सों एक तहां छीनि छीनिखावहीं। एककहैं ऐस्यहू समूह में अघात हो न दारिद तुम्हारे कहूं कबहूंनजावहीं॥ तटनी समरतीर खैंचें गहे आंत गीध मानहु ख्यलार भूरि बनशी बझावहीं। जात भटबहे भूरिचढ़े खग वृन्दजनु खेलत सुछैल लिये नावरि सुहावहीं॥ योगिनी जमाति मिलि भांतिभांति मुंडनके खप्परसुधारिचलीं गावतै सुजूटि जूटि। लोथिनसों जाल बही लोहुन प्रबाहहेरि आनँद उमँगि त्यों पियनलागी घूंटिघूंटि॥ चारौ ओर धावत पिशाच प्रेत बृन्दबृन्द भावत सुमनमांस खावतहैं लूटि लूटि। भाग्यवंत पूरण प्रहर्ष त्यों करतशोर रही खछाय तिहुँलोकन में फूटि फूटि॥ युद्ध तटनी के तट समिटे पिशाच प्रेत भूत बैताल जाल योगिनी जमातहैं। खप्पर कपालके कमंडल सो मूड़ लिये तीरतीर बैठत जे न्हायन्हाय जातहैं॥ ओझरी कि झोरीसन काढ़ि काढ़ि रावजनु घोरिघोरि पियत प्रमोद सरसातहैं। कोऊ प्रेत भूत

भट मूड़नको फोरि फोरि सतुवा सो सानि सानि गूदा खून खातेहैं ॥
सवैया॥ शोणित धार अपारचलीं बहि दुष्टनफोरि शरीरनकारे। सो हतसो भगवंत मनोगिरि कज्जल सों चले गेरु पनारे ॥ देखलगेवत्तु लोथिन के लखि कायर ही हैंजात दरारे। छायरही रव घोर महा सुनि शूरन चित्त उछाहन भारे॥बानर भालु बली बिकराल निशाचर सेनसमूह सँहारे। कोटिन मारि चकोट चपेटन लूमलपेटिकै सागरडारे॥ गर्जत तर्जत धावतहैं चहुँओर महाबल पुंजनभारे। त्यों भगवन्त प्लवंगन की रजनीचर युद्ध बिलोकतहारे॥
तब रावण निज हृदय बिचारा। निशिचर बंश भयउ संहारा॥
मैं अकेल कपि भालु अपारा। करौं कछुक माया विस्तारा॥
प्रभुहिं पयादे लखि सुरराई। दीन्ह्यो निज रथ तुरत पठाई॥
बरणि न जाइ मनोहरताई। हरषि चढ़े तापर रघुराई॥
हरिगीतिका छन्द ॥ आरूढ़ रथ रघुवंशमणि अवलोकि सुर जयजयकियो। कपि भालु हर्षित तोरि गिरितरु धाय अरि सैनहि लियो॥ नहिं जात कीशन मारु सहि दशशीश तब मायाठनी। बहुरूप कीन्हे प्रकट लक्ष्मण वालिसुत मर्कटधनी॥ अवलोकि डरपे भालु कपि हँसि राम धनुशायकलियो। क्षणमाहिं कीन्ह्यो दूरि माया निरखि सब हरष्योहियो॥ तब राम सबसन चितय बोले श्रमित बीरबनायकै॥अब माम रावण द्वन्दयुद्ध बिलोकियोचितलायकै॥

दो० असकहि श्रीरघुवंशमणि विप्रचरण शिरनाय।
सुमिरि शम्भु गिरिजा गणप दीन्ह्यो यानचलाय॥
प्रभुहिं देखि रावण सुभट चला क्रुद्धि बलऐन।
गर्जत तर्जत आइकै सन्मुख बोला बैन॥

सवैया॥ जीत्यहु जे भट संयुगमें सुनु तापसहौं तिनके सममैना।

रावणनाम सुज।हिर हैं यश लोकप जासुपरे बँदिऐना॥ दूषण बालि कबन्धबध्यो घटकर्ण समेघरवादिक सैना ॥ आजु निबाहि ल्यहौं सब बैरजु त्यागि धरा रण भागहि तैंना॥ तोमर छन्द॥ बश काल रावण जानि। रघुवीर बोल्यउ बानि॥ सवैया ॥ जनि जल्पसि रे यश नाशत है सुनि नीति बिचारिकरै सुक्षमा। जग पूरुष तीनिप्रकारकहे कबि पाटल औ पनसाँब समा॥ प्रद एक प्रसून प्रभून फलौ यक केवल होत फलेकनमा। न करैं कहि एक करैं कहिकै भगवन्तकरैं न धरैं मुखमा॥ श्रीरघुवीर के मीतिमई करि मंजुल बैन दशानन कानै। नेकुधस्यो हियरे न विचारि सुमूढ़ कुजाति कुबुद्धि अयानै॥ त्यों भगवन्त सगर्व कह्यो सुनु तापस मोहिं सिखावत ज्ञानै। बैरबढ़ावत तौ न डस्यो अब लागत ग्रीव बचावत प्रानै॥ त्रिभंगी छन्द॥ असकहि दशशीशा करि उर रीसा गहि भुज बीसा धनुतीरैं। शर कुलिश समाना मारन नाना लाग अयाना रघुवीरैं॥ दिशि विदिशिते पाटे महि नभठाटे लखि प्रभुकाटे शर घोरा। तबतौ खिसियाई शक्तिचलाई दत अजधाई प्रभुओरा॥लखि आवत ताही शर सँगमाहीं प्रभुदिशि वाही फेरिदई। रावण बहु मारे आयुधसारे काटि निवारे कृपामई॥ शतबाण पवाँरेसि सारथिमारेसि राम पुकारेसि बिकल सुनी। तुरतै प्रभुधायो सूत उठायो अतिरिस पायो रामपुनी॥ सजि चाप बिशाला बिशिष कराला राम कृपाला बहु मास्यो। करि बाजि निकंदन सूत सस्यंदन हति रघुनंदन महि पास्यो॥ दश बदन लजाना चढ़ि रथ आना आयुध नाना विधि छोड़े। निःफल भयसारे शूल पवारे दश महिपारें चहुँ घोड़े॥ प्रभु बाजि उठायो अतिरिस पायो बिशिख चलायो बहु आसू। दश दश शर साथा दशहुन माथा हति रघुनाथा दियं

तासू ॥ लखि रुधिर प्रवाहा निशिचरनाहा करिकै हाहा धुकि धायो। छाँड़्यो शरतीशा तब जगदीशा रिपु भुजशीशा महि आयो॥ भय तुरत नवीने पुनि प्रभुछीने इमि हरिकीने बहुदाँवै। छाये नभमाहू बहु शिर बाहू केतु सराहू जनुधावैं॥ प्रभु बाण चलावैं गिरन न पावैं छिदि नभ जावैं शोभ लह्यो। मानहुँ दिनराई सुकर रिसाई राहुहिं धाई पोहि रह्यो॥ रघुबर शर चण्डैं जिमि जिमि खण्डैं रिपु शिर मण्डैं फेरि नये। लखि बाढ़त शीशा इमि खलईशा गहि भुजबीशा धनुष लये॥ शर मारि सकोपा प्रभु रथ तोपा भयउ सोलोपा तकि न पर्‍यो। लखि सुरन दुखारी कार्मुक धारी शरण निवारी शिरनि हर्‍यो॥ दिशि बिदिशि ते डोलैं जै जय बोलैं करत कलोलैं भय जावैं। कहँ राम अहीशा प्रबल कपीशा कहि कहि शीशा बहुधावैं॥ दश मुख रिसबोरा करि अति शोरा शक्तिकठोरा हनेसि छली। लंकेश्वर ओरा शक्ति सु घोरा तुरत सजोरा चमकि चली॥ लखि रघुकुल भूषण टारि बिभीषण शक्ति सुतीषण आपु सही। श्रम बश जग भूषण देखि बिभीषन देत सु सीखन जैसचही॥ गहि गदा सिधार्‍यो हनि उरमार्‍यो प्रभु बल पार्‍यो प्रबलअरी। पुनि उठा सँभारी भिरा प्रचारी द्वउ बलभारी समरकरी॥ देखत हनुमाना अति बलवाना गहि पाषाना सपदि चल्यो। करि चरणप्रहारा दश मुखपारा सारथिमारा रथहि दल्यो॥ उठि बहुरि सुरारी कपिहि प्रचारी हन्यो करारी भट दोऊ। भे युद्ध अपारा गगन मँझारा पावनपारा कहि कोऊ॥ मारुत सुत व्यंकट लखि बश संकट धाये मर्कट समुदाई। लखि कीश निकाया निशिचरराया बिरच्यो माया दुखदाई॥ कपिभालु समेते कटक मजेते तहँ तहँ तेते दश शीशा। भय प्रगट निहारी डरि बनचारी भगे

पुकारी जगदीशा ॥ जगदीश बिलोका कटक सशोका सुर मुनियोंका दुखभारी। हँसि चापसुधारी शर यकमारी सकल सुरारी भय टारी ॥ हरषे सब बन्दर यक दशकंधर लखि तरु मंदर धरि धाये। जै जै कृतलेखा गगन अशेषा दशमुख देखा रिसवाये ॥ रिसवाय सुरारी सुरन प्रचारी भगे पुकारी रघुबीरें। सुनि अङ्गद धायो मारि गिरायो पुनि चलिआयो प्रभुतीरें ॥ उठि बहुरि दशानन हति निज बानन कपि बलवानन बिचलाये। लखि राम प्रवीने शिर भुजछीने तुरत नवीने ह्वैआये ॥ लखि बाढ़त शीशंन भुजरिपु कीशन भरिउर रीसन बहुरिधये। दशमुखहि प्रचारी बहुविधि मारी गिरितरु भारी बिपुलहये ॥ नल नील जुझारे कूदि बिदारे नखन लिलारे रिपुकेरे। लखि रुधिर प्रवाहा निशिचरनाहा दुनहुनगाहा करतेरे ॥ पटकत छुटिभाजे रिपुपर गाजे तबधनुसाजे लंकेशा। हति सबन गिराये कपि मुरछाये लैदल धाये ऋक्षेशा ॥ सवैया ॥ ऋक्षपतें दलसाजि तबैं रिपुरावणको बहुभांतिन मार्यो। कोपिदशानन बीरबली हति भालु अनेकन भूतल पार्यो ॥ देखि सुसेन सँहार ऋक्षेश प्रहारि पदै रिपु मूर्च्छित डार्यो। त्यों भगवंत सुजैंजै कै सहसेन श्रिराघवपाहिं सिधार्यो ॥ संयुताछन्द ॥ तबसूत दूर रावनै। रथघालिगो लै भावनै ॥ मिलियातुधान सत्रासही। लिय घेरि रावण पासही ॥

दो० जामवन्त योधा प्रबल अति बल बरणि न जाय।
समरभूमि तें रावणै जो गृह दीन भगाय ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेलङ्काकाण्डे रामरावणसमरजाम्ब्वानपदप्रहाराद्दशवर्णमूर्च्छावर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

दो० चरण कमल रघुबीर के बंदौं सुरतरु तोर।

जासु कृपा भगवन्त नित सिद्ध मनोरथ मोर ॥
तेहि निशि त्रिजटा जायकै जनकसुता के पास ।
समाचार रिपु के सकल कहि सो कीन प्रकास ॥

कवित्त ॥ शीशबाहु बादसुनि शत्रुकी सुसीय हीयऊपजी सुजाल त्रास नैनजल छाइयो । बारबार त्रिजटासों पूंछती सशोच सीय होइहै सुकाह कहि मोहिं समुझाइयो ॥ नाथ शरलागयहू न होत दशमाथ नाश मोरही अभाग भूरि मातुवाहि ज्याइयो । भाग्यवंत त्रिजटा संप्रेम सुनि कहीवात उर शरघात रिपु मरीधीर लाइयो ॥ याकेउर बास तव राबरे सु उरमाहिं प्रभुको नित्रासनित वेदन प्रकाशिहै । राम उर धाम सुखभुवन अनेक बास लागते सुबाणसब साथही बिनाशिहै ॥ भाग्यवंत जानिमन याही रघुवंश नाथ मारते न ताहि मन मेरे सत्यभासिहै । काटते शिरनि जब होइहै बिकल आंपु जाइहै सुछूटि ध्यान मारितब नाशिहैं ॥ सवैया ॥ यहबातसुनाय जबै सियको त्रिजटा उठि मंदिर आपुगई । रघुबीर बियोग कि पीरगँभीर सुधीर सिया उर माहिं जई ॥ फरक्यो तब बाम भुजा दृग बाम सुमंजुल मंगल मोदमई । भगवंत विचारि भले सगुनै मिलिहैं रघुनाथ प्रतीति भई ॥ प्रात दशानन जागिउतै चढ़ि स्यंदन संयुग कोपि सिधायो । गर्जत तर्जत घोर कठोर सुबीरबली रण सन्मुख आयो ॥ देखतबानर भालुइतै धरिभूधर वृक्ष प्रचारत धायो । त्योंभगवंत दशाननके दलपेलिकै दुष्टन मारिहटायो ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥
कियो मारि हैरान दुष्टेशकीशा । रच्यो कोपिमाया तबै बाहुबीशा ॥
भये भूत बैताल संभूत जाला । धरे चाप नाराच धाये कराला ॥
लिये योगिनीं यूथ कर्बाल हाथै । गहे पाणि दूजे सुमर्त्यान माथै ॥
पिये शोणितै सद्य सो नाचि गावैं । रटैं मारु मारू मुखैं बाय धावैं ॥

भये भीतकौशालि भागे पुकारी। जहँ जायँ देखें प्रवर्ताग्नि भारी॥ लग्यो फेरि बर्षै महातप्त बालू। भये भूरि व्याकुल्लकौशालि भालू॥ सुगर्ज्यो महा कोपकै शब्द घोरा। पर्यो लोक तीनों हहाकार शोरा॥ ससौमित्र सुग्रीव राघव समेता। किये रावणा वीर सारे अचेता॥ हरिगीतिकाछन्द॥ यहि भांति बीर अचेत करि सब प्रबल पुनि माया करी। हनुमान प्रगटेसि भूरि घेरेन्हि जाय रामहि गिरिधरी॥ चहुँओर धाय उठाय लूमन मारु मारु पुकारहीं। रघुवीर भंजनभीर ताके बीच यों छवि धारहीं॥ तोमरछन्द॥ जनु इंद्र चाप अनेक। लय बारि बिरची नेक॥ त्यहि मध्य राम कृपाल। जनु सोह बृक्ष तमाल॥ चतुरंसाछन्द॥ तब रघुनाथा। धरि धनु हाथा॥ यक शर हाया। निशिचर माया॥ सकल बिनाशी। प्रभु अबिनाशी॥ पुनि बहुबारी। शिर भुज आरी॥ इति शर काटे। महि नभ पाटे॥ पुनि जमि आवें। बिलँबन लावें॥ मरंतन आरी। श्रमित खरारी॥

दो० राम बिभीषण ओर तब चितयो आँखि उठाय।
कह्यो बिभीषण जोरिकर सुनियो श्रीरघुराय॥
प्रभु सर्वज्ञ कृपायतन जानत सब उर हाल।
निजजन गुरुता देन हित मोहिंपूंछेउ यहिकाल॥

हरिगीतिकाछन्द॥ हे दीनबंधु कृपाल याके नाभि अमृत कुंडहै। बल तासु जीवत मरत नाहिंन प्रबल अरि दशमुण्डहै॥ सुनि राम जग अभिराम बाण कराल हर्षि सुधारेऊ। अति हीन असगुन लागि हाहाकार त्रिभुवन पारेऊ॥ हरिपदछन्द॥ श्रुति प्रजंत प्रभु खैंचि शरासन मारे शर यकतीशा। शोष्यो बाण एक नाभी शर अपर हरे भुज शीशा॥ शिर भुज हीन रुण्ड महि नाच्यो धरणि

धसै धरधाई। तब युग खंड दिये करि ताको बिशिख मारि रघुराई॥ गरज्यो मरत घोर स्वभारी कहाँ राम रणमारों। अस कहिपरयो धरणि दशकन्धर देवन जैति उचारो॥ सवैया॥ जय राम कृपा सुखकन्द स्वछन्द निकन्दन द्वन्द प्रताप महा। प्रति अंग अनंग अनेकप्रभा भगवन्त बिलोकत शोक दहा॥ मुकुटाद्भुत जूटजटानि बिचित्र प्रसूनन की अति शोभ जहा। छवि पावत शेष न पार कही लघु बुद्धि बखानि कहौं सुकहा॥ करि दृष्टि दया सुरवृन्द अभै रघुनाथ अनाथन नाथ किये। हरषे लखि बानर भालु सबै जय राम कृपा सुख पुंज हिये॥ बरषें नभ देव प्रसूनन माल निहाल सुदुंदुभि जाल दिये। भगवन्त दशानन पाप समुद्र में बूड़त देवन राखि लिये॥

दो० जै जै करि बरषहिं सुमन सुर नभ चढ़े बिमान।
भाग्यवन्त रणभूमि में शोभित श्रीभगवान॥

सवैया॥ रावण रामको युद्ध महा यह को कहिकै कबि पारहिं पावै। शारद शेष गणेश बिरञ्चि महेश थके श्रुति नेति बतावै॥ जा दल युद्ध प्रचण्ड बलै कहिबोति कठोर बिचार न आवै। त्यों भगवन्त श्रिराम चरित्र यथा मति गाय हिये सुखछावै॥

दो० निज कर जाको मारिकै राम परमपद दीन।
तेहि रावणको कौन बिधि बरणै सुकबि प्रबीन॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेलङ्काकाण्डेरावणबधवर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः ८॥

सवैया॥ दीनदयाल सुजान सुशील शिरोमणि वेद पुकारत गाथै। घोर भवार्णव बोहित नाम सुसेवक पद्म प्रदानँद पाथै॥ गोद्विज देव धरा दुखभंजन रञ्जन भक्त धरे धनुभाथै। बंदतहै भगवन्त सदा कर संपुट कै पद श्रीरघुनाथै॥ पद्धरी छंद॥ मयजादि नारिसुनि

मरणकंत। ह्वै विकल रुदत धाईं तुरंत॥ गति नाह देखि रोवैं पुकारि। उर ताड़ि ताड़ि तन सुरति डारि॥ गुण तेज रूप बल बुधि प्रताप। बहु बरणि बरणि करतीं बिलाप॥ बल बाहु जासु तिहुँ लोक राज। प्रिय कीन ताहि खग भखत आज॥ ज्यहि कमठ शेष सहि सक न भार। महि परेउ आजु तन भरि सो छार॥ भुज बलहिं काल यम जित्यो नाथ। अब आजु पर्खो कस ज्यों अनाथ॥ कुंडलिया॥ नाथ बैर रघुनाथ सों करि फल पायो एहु। रहा न तुम्हरे कुल बिषे रोवनहारो केहु॥ रोवनहारो केहु कालबश कहा न मान्यो। त्रिभुवनपति श्रीराम तिनहिं करि मानुष जान्यो॥ जान्यो कछु न कुभाव मुनिन दुर्लभ रघुनाथा। दीन्ह्यों गति प्रिय तुमहिं राम सम और न नाथा॥

दो० तब रघुबीर बिभीषणहिं सादर आयसु दीन।
देश काल बिधिवत सरिस मृतक कर्म सब कीन॥

कह्यो अनुजसन तब भगवन्ता। कपिपति जामवन्त हनुमन्ता॥
अंगद अरु नल नील समेता। जाहु सकलमिलि लंकसचेता॥
राज तिलक सुन्दर सुखदाई। देहु बिभीषण शीश चढ़ाई॥
भलेहि नाथ कहि जाय सप्रीती। कीन्ह्योंतिलक यथा श्रुतिरीती॥
बाजे बाजन बिबिध प्रकारा। लगे होन शुभ मंगल चारा॥
सहित बिभीषण बहुरि अहीशा। आइ रामपद नायउ शीशा॥
प्रभु हनुमानहिं कह्यो बहोरी। जाहुतात जहँ जनककिशोरी॥
समाचार कहि लै कुशलाता। आवहु बेगि घूमि बलब्राता॥

दो० पवनतनय तब जायकै सियपद नायो माथ।
पूंछि कुशल बरणयोसकल चरित जोरियुग हाथ॥

सवैया॥ मातु दशानन संयुग मैं रघुनायक शायकसों निज

जीते। लंककि राज विभीषणकोदय देवनवृन्द किये दुखरीते॥ हैं कुशलात धरै श्रुति मात कृपा सुखव्रात सबन्ध पिरीते। त्यों भगवन्त मिलै अब चाहत नाथ तुम्हैं फुर मानहुँ ईते॥ तिलका छन्द॥ सुनि वायुतनै। बरवानि मनै॥ सुखपुंज सिया। सति मानिकिया॥

दो० सुनु सुत तोको देउँका कीन्ह्यो मन अनुमान।
तीनिलोक नाहिंन कछू है यहि वचन समान॥

सवैया॥ मातु त्रिलोकन राजससाज लहै हम आज न संशय यामै। आनँदकन्द कृपा सुखवृन्द स्वछन्द सदा परिपूरणकामै॥ रावण देव सतावनको रणजीति सुपाय विजय अभिरामै। हेरि अनन्त प्रभा भगवन्त उदार अपार सुसानुज रामै॥ संयुता छन्द॥ सुनु पुत्र सद्गुण जावतै। निवसैं त्वया उर तावतै॥ करुणा सदा रघुनाथकी। रहिहै सु लच्छमण साथकी॥

सुनि हनुमान हरपि शिरनाई। आइ प्रभुहिं सिय कुशलसुनाई॥
सुनिसियकुशल सकलसुखऐना। भये प्रेम वश राजिवनैना॥

हरिपुद्र छन्द॥ तब रघुवीर विभीषण अंगद हनुमत संग पठये। सादर सियहि चढ़ाय पालकी प्रभुसमीप लैआये॥ राख्यो प्रथम अनलमहँ सीतै करि उर अन्तर शाखी। सो प्रभु प्रकटकीन चहै ताते वचन कटुक कछु भाखी॥ सुनि लच्छमणते तुरत जानकी पावक प्रबल मँगाई। चितारचाय कह्यो जो मोरे मनक्रम वचन सदाई॥ तजि रघुवीर आनगति नाहिंन तौ कृशानु उरबासी। होहु हमैं श्रीखण्ड सारिखे यहि अवसर सुखरासी॥ असकहि गई प्रविशि सिय तामें धरि पावक द्विजरूपा। सौंप्यो प्रभुहिं लाय श्री सादर पावन परमअनूपा॥

दो० राम वामदिशि जानकी राजत स्वइ सुखसार।
भाग्यवन्त शोभा अमित क्यों मुखवरणौं पार॥
नभ निशान बाजहिं विपुल बरषहिं निर्जर फूल।
भाग्यवन्त सिय राम छबि हृदय बसहु सुखमूल॥

दशरथसहित सकल सुरबृन्दा। आये जहँ प्रभु करुणाकन्दा॥
सानुज उठि रघुपति शिरनाई। करि विनती कहि कथासुनाई॥
तव प्रसाद रण सन्मुख ताता। जीत्यों असुर अजयबलत्राता॥
सुनि दशरथ अति आनँदभारे। दै अशीश सुरलोक सिधारे॥
राम लषण सियरूप निहारी। विधिमनभयो प्रगट सुखभारी॥
नखशिख निरखि रूप अनुरागे। करन सप्रेम विनय विधिलागे॥

कवित्त॥ जयति जै उदार भूमिभार हार कारुणीक रूप शील धाम त्यों न हेरि शोभ आनकी। धीर बीर साहसी समर्थ दानि अर्थ धर्म काम मोक्ष चारिहूके बेद कीर्त्ति गानकी॥ भानु बंशपद्म के प्रकाश कार भानुचंड पारब्रह्म टार जाल भीति देवतानकी। भाग्यवंत जानिदास देहु पाँय प्रेमचारु नौमि नौमि नौमि त्यों सबंधु राम जानकी॥ शिव अस्तुति कबित्त॥ मोह तम तरणि विशुद्ध बोध कारुणीक दीनबन्धु साहेब सदैव दास हित्तही। पूरण प्रताप यश जाहिर अखिललोक सूखमा समृद्धि मन लेत त्रिनु वित्तही॥ धारि अवतार भवभारको बिध्वंसि भूरि तूरित्रास देवन प्रमोदपूरि चित्तही। भाग्यवन्त राम सीय सानुज कृपायतन कीजिये निवास त्यों सु दास हीय नित्तही॥ इन्द्र अस्तुति कबित्त॥ श्याम गौर गात मञ्जु वारिजात दिव्य नैन सूखमा समृद्धिवार मैन कोटि कीजिये। पाणिचाप बाण धृत्य कृत्यनाश राकसालि पालि निर्जरालि दालि शोक सुक्ख भीजिये॥ छाइयो प्रतापलोक लोकनै क-

लाप आप नामके प्रताप पापताप तीनि छीजिये। भाग्यवंत जानि दास जानकी सबन्धु रामकृपया कटाक्षके स्वभक्ति चारु दीजिये ॥

दो० करि विनती करजोरि पुनि कह्यो हरषि सुरराज।
जोप्रभु आयसु होय मोहिं करौं बेगि स्वइकाज ॥
तात भालु कपि विपुलमम हने निशाचर जौन।
ममहित त्यागे प्राणनिज सकलजियावहु तौन ॥

सुनि सुरपति अमृत बरषाई। दियेभालु कपिसकल जियाई ॥
जै जै करि सुर सकल सिधाये। आय बिभीषण सब शिरनाये ॥
करिप्रणाम बिनती करि सादर। बोले बचन सुनिय परभाधर ॥
नाथ जानि जन कीन्ह्यो दाया। सब प्रकार मोकहँ अपनाया ॥
कहँ लगि करौं प्रशंसा भूरी। त्रिभुवन रह्यो सुयश भरिपूरी ॥
अब चलि जनगृह पावन कीजै। कह रघुबीर सखा सुनिलीजै ॥
मोहिं तोहिं कछु अंतर नाहीं। परयह समुझि देखु मनमाहीं ॥
मम मन भरत बिलोकौं जाई। गयेअवधि पुनिमिलबनभाई ॥
करहु कल्प भरि राज सुहाई। अन्तधाम मम निवस्यो आई ॥
सुनि पुनि भवन बिभीषण जाई। भूषणपट भरि पुष्पक लाई ॥
प्रभु आयसु नभ चढ़ि बरषाये। मनभावत सबहिन सोपाये ॥
पहिरि पहिरि कपिभालु अनूपा। आये जहँ रघुपति सुरभूपा ॥
देखि राम हरषित करिदाया। बोले बचन प्रेम जनुजाया ॥

सवैया ॥ हे कपिभालु सुनौ सगरे तुम्हरे बल मैं रिपु रावण जीता। राज बिभीषणको सुदई करि आपनि पायगई हमसीता ॥ जाहुघरै अपने अब मोहिं भज्यो भगवन्त कस्यो जानि भीता। आयसु पाय चले कपिभालु सुधारि हिये सिय राम पुनीता ॥ हरिपद छंद ॥ जाम्बवंत कपिराज बिभीषण अङ्गदादि हनुमंता। नीलनला-

दि यूथपति औरौ सुभट जिते बलवन्ता ॥ सीता अनुज सहित रघुनन्दन चढ़ि बिमान सब साथा । उत्तर दिशा चलायो सादर नाय विप्र पद माथा ॥ जयजय करहिं देवनभ संकुल कोलाहल बहु होई। होहिं सगुन सुन्दर सुखदायक मुदित राम सिय जोई॥ सादर सियहि देखावत रघुबर जहँ जहँ असुर सँहारे । दरशे आइ सेतु सागरको शंकर अरचनकारे॥ दण्डक पंचबटी मिलि कुंभज-अत्रि आदि ऋषिराजे । करि प्रणाम अनसूयहि आये चित्रकूट सुख साजै ॥ करि मज्जन पय भेंटि मुनिन कहँ बहुरि बिमान चलाये। यमुनहिं पूजि बन्दि मुनि बृन्दन मुदित प्रयागहि आये ॥ करि मज्जन सादर तिरबेणिहि द्विजन दान बहु दीन्हे । बारबार शिर नाय प्रयागहि चले अवध सुधि कीन्हे॥ हनुमानहि रघुबीर बोलि तब तुरतहि अवध पठायो । कहि भरतहि मम कुशलकुशल उन लै तुम आतुर आयो॥ गवन्यो हरषि प्रबल मारुत सुत प्रभु आये जहँ गंगा। उतरे देखि देवसरि पावनि करणि सकल अघभंगा॥ सिय सुरसरि हिं पूजि बहु भांतिन लहि अशीश मन भाई। सुनत निषाद नाथ अति आतुर पर्यो चरण तल आई ॥

दो० देखि राम उठि सादर भेंट्यो हृदय लगाय।
परम प्रीति बैठाय ढिग पूंछी कुशल सुभाय ॥

पद॥ नाथ कुशल पदपद्म निहारे। जे पद कमल पूज्य अज शङ्कर शरण सभीत हरण अघ भारे॥ दीनदयाल प्रणत आरत हर सुयश पुनीत पुराण पुकारे। पूरण काम धाम सुख सुन्दर राम कृपाल प्रेम रसभारे॥ सब बिधि अधम निषाद नीच मैं कुटिल कु-जाति कुकर्म्म अगारे । सो उरलाय भरत जिमि भेंट्यो, गहिगुंण

दोपन एक बिचारे ॥ यह शोभा यह रूप माधुरी यहय सुभाव कृपाचित धारे। सीता राम लषण तीनों जन भाग्यवन्त उर बसहु हमारे ॥

दो० रावण राम सुयुद्ध यह जे गावहिं करि प्रीति।
बिनु श्रम भवनिधि पारते जाहिं मोह दल जीति ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहबर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणि
ग्रन्थेलङ्काकाण्डेश्रीरामचन्द्रागमनशृङ्गवेरपुरप्राप्त
वर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९ ॥

इतिलङ्काकाण्डसमाप्तम् ॥



भक्तिशिरोमणि उत्तरकाण्ड ॥

सवैया ॥

श्याम शरीर सुभाय सुहावन पावन पीत पटाद्भुत भ्राजै । पाणव कार्मुक बाण कसे कटि तूण बिभञ्जन दुष्ट समाजै ॥ सीय सपुष्पक यान अरूढ़ सुसेवत बंधु महा सुखसाजै । बंदतहै कर सम्पुट कै भगवन्त सप्रेम सदा रघुराजै ॥ छप्पै ॥ रह्यो अवधि दिन एक अवध आये प्रभु नाहीं । कृश तनु राम बियोग सकल शोचहिं मन माहीं ॥ सगुन होहिं शुभ देखि मुदित जहँ तहँ सब कहहीं । मन अनंद अस होत मनहुँ आवन प्रभु चहहीं ॥ तब भरत नयन भुज दक्षिण उठे फरकि पुनि पुनि सुतन । शुभ सगुन जानि उर हरष अति लागे करन बिचार मन ॥

सो० तेहि अवसर हनुमान विप्ररूप धरिकै सुभग ।
आय गयो तेहि थान गत आसन श्रीभरत जहँ ॥

सवैया ॥ शीश जटा कृश गात किये मुनि वेष मनै प्रभु पांवरि दीन्हें । लागि रही रट राम सिया रसनासन चारु कुशासन कीन्हें ॥ त्यागि दिये पट भूषण भूरि सु औधि अधार हिये दृढ़ लीन्हें । त्यों भगवन्त बिलोकत भारत बूझि मिले हनुमानहिं चीन्हें ॥ शोचहु

जाहि सप्रेम सदा कुशलात महा मुद मंगल छावत। जीति रणै रिपु रावणको दय स्वस्थल बास सुदेवन यावत ॥ भूप विभीषण को करि कीरति नारद शारद शंकर गावत। सानुज सीयस सो भगवन्त बिमान चढ़े प्रभु औधहिं आवत ॥

सुनत भरत अति आनंद छाये। परम प्रीति गहि हृदयलगाये ॥
बार बार अति आदर देई। बोले बचन प्रेम जनु भेई ॥
तात सँदेश कह्यो जस मोहीं। तस कछु है न देउँ जो तोहीं ॥
ताते तव ऋणियां मैं ताता। सुनिहरष्योकपि पुलकितगाता॥
बार बार पद शीशनवाई। चल्यो पवनसुत आयसु पाई ॥
भरत आय पुर गुरुहि सुनाये। कहिप्रभुकुशलजननिसमुझाये॥

दो० सदल जीति रावण असुर सानुज सीयसमेत।
गावत यश सुर नर मुदित आवत कृपानिकेत ॥

॥ हरिपद छन्द ॥ प्रभुआगमन सुनत उठिधाये सकल अवधपुर बासी। मंगलसाज साजि बहुभाँतिन चले मिलन सुखरासी ॥ हरषित भरत बन्धु गुरु परिजन सहित प्रेमरसपागे। कृपानिधान राम कहँ सादर चले लेनहित आगे ॥ परमानन्द अवधपुर छायो चढ़ी अटारिन नारी। निरखहिं गगन बिमान मनोहर दरश आश उर भारी ॥ श्रीहनुमान जाय उत रामै भरत कुशल कहिगाये। चढ़ि बिमान रघुवंशविभूषण आतुर अवधसिधाये ॥ कृपासिन्धु सब कपिन देखावत अवधपुरीकै शोभा। महिमा अमितकही श्रीमुख जो कहै सुकबि असकोभा॥ आवत देखिलोगसब रघुपति पुरढिग यान उतारे। दीन्हे पठै धनदपहँ पुष्पक रामसुजान उदारे ॥

दो० भरतसंग पुरलोग सब आये जहँ रघुबीर।
देखि राममुख चंद्र छवि भये बिगत तन पीर ॥

कुंडलिया ॥ कीन्हे राम प्रणाम तब सानुज गुरुपद धाय । भेंटि कुशल बूझी प्रभुहिं प्रीतिसहित मुनिराय ॥ प्रीतिसहित मुनिराय कुशल हमरे तवदाया । पुनि विप्रन्ह शिरनाय सबहिं भेंटेरघुराया ॥ आय भरतपुनि शीश राम पायँन धरिदीन्हे । प्रेम मगन नहिंउठत राम बहुबिधि बलकीन्हे ॥

दो० बलकरि कृपानिधान पुनि लीन्ह्यो हृदयलगाय ।
भरत रामके प्रीति अति नहिं मुख बरणि सिराय ॥
कृपासिंधु बूझत कुशल कहत भरत शिरनाय ।
सब बिधि मंगलकुशल अब नाथदरश तवपाय ॥

पुनि रिपुहनहि मिले रघुनाथा । लषण भरत पद नायो माथा ॥
बहुरि लषण रिपुहन द्वउ भाई । मिले परस्पर प्रेम बढ़ाई ॥
सानुज भरत सीयपद बन्दे । अभिमत आशिषपाइ अनन्दे ॥
पुनि सानुज कृपाल सुखरासी । क्षण महँ मिले सबहि पुरबासी ॥

दो० यहि बिधि सबहिंन देतसुख चले राम सुखकंद ।
कौशल्यादिक मातु सब लखि धाईं सानंद ॥

सवैया ॥ पूरणप्रेम प्रमोदभरी जननी सब देखत रामहि धाईं । ज्यों दिनअन्त सुबच्छन हेरि हुंकारि कै धावहिं धेनुलवाईं ॥ सानुजराम मिले सब मातन जात न सो कहि प्रीतिसुहाई । त्यों भगवंत त्रिलोकतरामहिं दूरिभयो दुख आनँद छाई ॥

दो० तब सीता सासुन सकल जाइ नवायो शीश ।
बूझि कुशल मनभावती दीन्ही सबन अशीश ॥

हरिगीतिका छन्द ॥ श्रीराम रूप अनूप नखशिख मातु सकल निहारहीं । लय हेमथार सँवारिआरति वारबार उतारहीं ॥ मणिबसन भूषण वारि सादर वायु अंचल ते करैं । भगवंत सानुज रामसीतहि

निरखि उर आनँदभरैं॥ हरिपदछन्द॥ जामवंत कपिराज विभीषण अंगदादि कपिवीरा। नील नलादि वायुसुत सुन्दर धारे मनुजशरीरा॥ भरतसनेह शीलव्रतनेमैं सादर सकल सराहैं। पुरजनरीति प्रीति रघुबरकी निरखि निरखि सुखलाहैं॥

दो० प्रभु आयसु तिनपायकै गुरुपद नायें शीश।
जानि राम प्रियलाय उर दीन्ह्यो मुनि आशीश॥

सो० पुनि तिननायो शीश कौशल्याके चरण तल।
दीन्ही हरषि अशीश जानि राम प्रिय भावती॥
गगन सुमभ सुर वृन्द बरषि हरषि जैं जैं करहिं।
गवने गृह रघुनन्द त्रिभुवनपति शोभा सदन॥

कवित्त॥ द्वारद्वारप्रति चारु कंचन कलशधारि बन्दन पताक केतु सबहिन साजे हैं। बीथिनै सिंचाय शुचि सुन्दर सुगन्ध जाल गजमणि चौकत्यों सुमणि दीपराजे हैं॥ साजे पुरलोगन सुभाँति भाँति मंगलांग बाजे बहु बाजन सुगजबाजि गाजे हैं। भाग्यवन्त सूखमा श्रिऔधकी बखान कौन देखते सुछबिजासु सुरराजलाजेहैं॥ सवैया॥ कंचनथार सँवारि सुआरति अंगन अंग शृँगार शृँगारी। गावत मंगल राग मनोहर बृन्दन बृन्द चलीं मिलि नारी॥ आरति भंजन राघवकी शुभ आरतिकै धन भूषणवारी। त्यों भगवन्त विलोकत रूप अनूप लहैं सब आनँदभारी॥

दो० प्रथम केकयी के भवन गये राम सुखदैन।
बहुविधि ताहि प्रबोधिकै पुनि आये निज ऐन॥
महामोद छायो अवध आये रामसुजान।
भाग्यवन्त श्रीरामयश करैं मुदित सब गान॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेउत्तरकांडे श्रीरामचन्द्रअयोध्यागमननिजमन्दिरप्राप्तवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

दो॰ राम लषण श्रीजानकी भरत शत्रुहन साथ।
भाग्यवन्त बन्दनकरौं धरि पद पंकज माथ॥
प्रात वशिष्ठ बुलाइकै गुरुजन विप्रसमाज।
कह्यो राज्यपद रामको देहु सुसाइति आज॥
मुनिबोले द्विजगण हरषि भली कह्यो मुनिराज।
अब बिलम्ब नहिं कीजिये वेगिकरौ यह काज॥

त्रोटक छन्द॥ तब बोलि वशिष्ठ सुमन्त लिये। सब साजहु साज निदेश दिये॥ पठये बहु धावन बोलि तबै। भय लावत मंगल द्रव्य सबै॥ चहुँओर सजावत भे नगरै। सिंचवाय सुगन्धदिये डगरै॥ रथ बाजि गयन्द सजे सगरे। मुद ठौरन ठौरन पै बगरे॥ बहु भाँतिन बाजि निशानरहे। छविपावत पार न शेषकहे॥ नभ देवन दुन्दुभि जाल दिये। झरि फूलन के जय जैति किये॥ हरिपदछन्द॥ प्रभु आयसु तब पाय सेवकन प्रथम सखन अन्हवाये। सुग्रीवादि साजि पटभूषण शुभ आसन बैठाये॥ तब रघुबीर भरतके सादर निजकर जटा छँड़ाये। तिहुँ भ्रातन अन्हवाय आपही पटभूषण पहिराये॥ बिवराये पुनि जटा आपने करि मज्जन तन साजे। भूषण बसन मनोहर मंजुल निरखि काम बहु लाजे॥ सासुन सकल जानकिहि सादर मज्जन तुरत कराई। दिव्य बसन भूषण बहु सुन्दर अँग अँग सजे बनाई॥ राजति रामबाम दिशि सीता छवि समुद्र सुखखानी। शोभा अमित देखि सब मातन जन्म सफल करि मानी॥

दो॰ ब्रह्मादिक सब देवता नारदादि मुनि बृन्द।
चढ़ि बिमान आये अवध देखन हित सुखकन्द॥
प्रभु शोभा अद्भुत अमित लखि हरषे मुनिनाह।
रतन सिंहासन दिव्य तब माँग्यो सहित उछाह॥

कवित्त॥ कोटि शशि सूर सों प्रकाशपुंज होत जासु जगमग ज्योति मन मीननको जारहे। हेमहीर आदि कल कलित ललित चारु चित्रित बिचित्र कामदायक बहार है॥ जात चकचौंधि दृष्टि हेरिये सुबिधि कौन तेजि को समृद्धि मोहतम तोमहार है। भाग्यवन्त शेष शम्भु शारदा चकित देखि रामके सिंहासन कि सूखमा अपारहै॥ जटित बिचित्र मणि माणिक जवाहिरादि पन्नन प्रकाश पुंज होत तमनाशनै। मंजु मुक्त झालरैं बिराजमान ओरचारि कमलाष्ट दल चारु भ्राज मध्य आसनै॥ अवनि अकाश लोकलोकन प्रकाश दिव्य प्रगटी सुद्युतिजाल प्रदभव्य दासनै। भाग्यवंत सूखमा समृद्धिं सो बखान कौन भ्रमत बिरञ्चि बुद्धि राघव सिंहासनै॥

दो० तापर श्रीसीता सहित बिप्रन शीश नवाय।
रामचन्द्र बैठे हरषि मुनिवर आयसु पाय॥
प्रभु शोभा अद्भुत अमित लखि हरपे सुरबृन्द।
बरषि सुमन दुंदुभि दिये जय कृपाल सुखकन्द॥
मुनि बशिष्ठ प्रथमैं तिलक कीन्ह्यो रघुबर माथ।
पुनि सब बिप्रन को दियो आयसु श्री मुनिनाथ॥

राज तिलक सुन्दर शुभ देखी। हरषे सब नरनारि बिशेखी॥
परमानन्द मगन सब माता। करहिं आरती पुलकित गाता॥
दिये दान बहु द्विजन हँकारी। कहि न जाय उर आनँद भारी॥
जयजय करहिं कोलाहल होई। मन भावत पाये सब कोई॥
बाजहिं बिपुल निशान सुहाये। जहँ तहँ युवतिन मंगल गाये॥
पढ़ैं बेद भूसुर समुदाई। मागध सूत बन्दि गुणगाई॥

कबित्त॥ बेद मंत्र ब्राह्मण उचार जयकार नभ देवन अपार बृष्टि सृक सुमनंनानकी। पावन प्रताप यश कीरति कलाप चारु

मागध सबन्दि सूत गायकनगानकी ॥ नाग नभ नगर निशान धुनि धूमधाम बिरची बिचारि बेद रचना बिधानकी । भाग्यवन्त बिस्तृत प्रताप पुंज ठामठाम हेममै सिंहासनै बिराजैं राम जानकी॥ सज्जितांग भूषण बिचित्र पट क्षौम धारि गामिनी द्विरद बाम दामिनी समानकी। दूब दधि रोचना कनकथार भार भरि आरती सँवारि चलीं भारतीसि गानकी ॥ आरती उतारि वारि दन धन प्राण हेरि सूखमा समृद्धि मार्ग दृग चारु पानकी । भाग्यवन्त राजनके राज रघुबंश राज हेममैं सिंहासनाजु राजैं राम जानकी॥ सेवा साज साजि लिये सेवक सखादि बंधु आस पास राजत बिचित्र शोभ ठानकी। ब्यजनादि चामर सुछत्र चारु भरतादि धृत्य कृत्य गान नृत्यदार देवतानकी ॥ हेमहीर आदि बखशीश गथ होत पाय देतहैं अशीश आश पूर्ण याचकानकी। भाग्यवन्त राज बंश शीशताज महाराज हेममै सिंहासनाजु राजैं राम जानकी ॥ फर्श फेन क्षीर सों फटिक भीतिकान फोरि प्रगटी सुभास्य सम चन्द्र चन्द्रिकानकी। ज्योति दीप बृक्षनकि ऋक्षन बिमन्दकार हार कृतकेतु मन सूखमा बितानकी ॥ चौघड़े चगेरे चारु गेरेलूय गंध पात्र पान पीकदान दिव्य द्युति माणिक्रानकी। सोह साज राजसी समाज पुंज भाग्यवन्त हेममैं सिंहासनै बिराजैं राम जानकी ॥ चौघड़े मयन्द कर केशरी चगेर धारि आरसी पनस नील सज्ज सौज पानकी । द्विबिदेत्रदान दधिमुख खासदान साजि गवलै गिलौरिकाश्रनल पीकदानकी॥ अंगदासि चाप लंकनायक सुगर ढाल तूण जामवान शक्ति आगे हनुमानकी । भाग्यवन्त राजसी समाज साज पुंज भ्राज हेममै सिंहासनाजु राजैं राम जानकी ॥ धारि धर्म धूरिका निकारि भवभूरि ब्याधि पूरि प्रणराज शत्रुतूरि

तारि भ्राजते। चैलदै त्रिलोक दलि मेदिनी कदम्बभार पारकैस दिव्यभीति आश्रपसमाजते॥ क्रूरकर्म खोजनासरोज धर्म रोजराज पायभे प्रकाश साधु सज्जनालि गाजते। भाग्यवंत राजनके राज राजा रामचन्द्र जानकीस आजु भद्रआसनै विराजते॥ मंडितार्क जालसों प्रकाशपुंज हेम कीट क्षौम जरतार दिव्य अम्बरांगभ्राजते। मंजु मुक्तमाल कल कारमुक छत्य पाणि जग मगज्योति मणि भूषण सुसाजते॥ श्यामजलदाभ तन सूखमा समृद्धि चारु हारि हेरि ऊपमान रतिकाम लाजते। भाग्यवंत राजनके राजराजा रामचन्द्र जानकीस आजु भद्र आसनै विराजते॥ भानुसों प्रताप जग जालभो उदित चारु जैतिजै निशान दिव्य लोक लोक बाजते। पापताप यामिनी विनाशपाय कामक्रोध चौर बृन्द ओर चारित्रास भूप भाजते॥ साजि भेंट राजसी नरेश देश देश आनि धारि अग्र अस्तुती समग्र भूप साजते। भाग्यवंत भूपवंश शीशताज रामचंद्र जानकीस आजु भद्रआसनै विराजते॥ पंथ सतसाफभे अपन्थवन्द धाम धाम खुलिगे कपाट कुलिसज्जित सुसाजते। नीतिको प्रचार जग रीतिप्रीति सोहियत जोहियत जाहिमन मोद पुंज भ्राजते॥ पूर्ण सौजभावती समस्त नेकु इच्छयान दूरि दुष्कृताघहंत भीतिभक्त राजते। भाग्यवंत भानुसों उदितराजा रामचन्द्र जानकीस आजु भद्रआसनै विराजते॥ व्योमतन श्याम दिव्य भूषण नक्षत्र जाल चन्द्रमास्य मालशोभ दामिनीकि साजते। कौमुदी सुकीर्त्ति मंजु भ्राजतीभुवनभूरि स्रवतोसुधासो सुखसंकुल सुराजते॥आनँदाब्धि बाढ़िचल बिदिशि दिशान फैलि भव्य मूल सूखमा सरतिमार लाजते। भाग्यवन्त राजनके राज राजा रामचन्द्र जानकीस आजु भद्र आसनै विराजते॥ स्वच्छसार शोभ मे प्रकाशमान दीप दीप जा-

गती सुकीर्त्तिजाल बीच वेद गाथके। ज्योतिजग ज्योतिधौं ज्वलित आदिज्योति ज्योतिर्ज्योति पुंज ऊपमान सम एक साथके॥ अक्षतादि चन्दन सरोचना कलित चारु सूखमा बलित पाणि कंजमुनि नाथके। भाग्यवन्त भाव मन मैनको हरनहार राजसी तिलक माथ सोहै रघुनाथके॥ भ्राजपुंज राजसी समाज साज भाग्यवंत सूखमा अदभ्रपार शेष सो न पावते। शोकते बिशोक लोक लोकनै प्रहर्ष दात्रि चात्रि कालिदास कीर्त्ति स्वाति स्वामि गावते॥ विप्र साधु सज्जनालि देवता मुनींद्र वेद आनँदाढ्य जालभावलोकि प्रेम भावते! कारुणीक रामचन्द्र जानकीस भद्रधाम धामदा समग्र अग्र अस्तुती सुनावते॥ बसिष्ठ स्तुति कवित्त॥ वेद तत्त्वसार मै समर्थ हंस बंशराज ऊपमान भ्राजसम ऊपमावगाहिये। बिप्रसाधु सज्जनार्थ आनि ह्वै नृपाल लाल भंजिभार भूवजाल यश क्यों सराहिये॥ नाम गुणधाम बल पार है न श्रुति गाथ हाथकै सु छाँह भक्ति भावना निबाहिये। भाग्यवन्त भानुबंश शीशताज रामचन्द्र रावरी सु राज्य यों अचल नित्त चाहिये॥ सवैया॥ साधु महीसुर सज्जन हेत कृपाकरि ह्वै अवधेशके बारे। पालन देवनकै खल घालन धर्म प्रचारि यशै बिस्तारे॥ आगम बेद पुराण कहैं सब अद्भुत कर्म हैं राम तुम्हारे। जैति सु जै भगवन्त सदा नृपनंदन दुःख निकंदन हारे॥ ब्रह्मा स्तुति कवित्त॥ पावतो न मर्म शेष शारदा निगम शम्भु अद्भुतावतार कर्म रावरे सकलहैं। भक्त भूमि भूसुरामरन काज धारि तनु कृत्यकार त्रातुपुंज लीलया अमल हैं॥ भाग्यवन्त पालिप्रद भव्यदास बृन्दनै सु घालि दुष्ट दुष्कृताघ दालि पुंज दलहैं। भानुवंश भूषणावतार पूर्णनाथ आपु भ्राजते पताक जग यशके अचलहैं॥ सवैया॥ राम चरित्र अपार सतै तव शंकर

शेष न जानन हारो। अद्भुत लै अवतार अनेक महीसुर सज्जन के दुख टारो॥ मोदमई कृत लीलन पुञ्ज जु गावत पावत हैं भव पारो। कोशलराज कुमार द्वो भगवन्त सु साहेब दानि उदारो॥ शिवस्तुति सवैया॥ रामस्वरूप तुम्हार सदै मुदमंगलमय मृदु मूरति सो है। ध्यावत कोटि कटैं भवसंकट दायकहू फल वांछित को हैं॥ आगम बेद पुराण प्रशंसत नेति निरन्तर गावत जो है। त्यों भगवन्त सु जैति सदा रघुराज हरौ भ्रमफन्दन मोहे॥ रोला छंद॥ जै करुणा सुखधाम राम भवभार विभञ्जन। शमन पाप संताप दुरित दुख दारिद गञ्जन॥ जै अवधेश सुरेश वेश यश विस्तृत पावन। नील कमल तन श्याम काम शत कोटि लजावन॥ जै धृत शर कोदण्ड कठिन खल दल बल खण्डन। प्रणत पाल सर्वज्ञ तज्ञ तारण महि मण्डन॥ जै रञ्जन सुर संत भक्त वत्सल बलधामं। गुणागार भवपार पोत पावन दृढ़नामं॥ जै अनाथहित नाथ पाहि प्रणतारति मोचन। रघुकुल कमल पतंग सुखद पंकज दल लोचन॥ जै पूरण अवतार देव त्रय सम्भव कारण। कृत अद्भुत शुभ चरित सुलभ जीवन उद्धारण॥ जै मद भुवन प्रमोद भूप मणि मौलि कृपालं। महाराज राजेन्द्र राम यश विदित विशालं॥ जै जै जै श्रीराम कृपा वारिधि गुणधामं। भाग्यवन्त निज भक्ति देहु संतत अभिरामं॥

दो० बार बार वर मांगौं धरौं चरण पर माथ।
निज पद पंकज भक्ति मोहिं देहु दया करि नाथ॥

इन्द्रस्तुति सवैया॥ हे रघुवंश विभूषण राम गुणोत्तम धाम विनय सुनि लीजै। मत्स्यवतार अपार कथा श्रुति गावत पै तव अंत न कीजै॥ त्यों भगवन्त तुम्हें प्रिय सो निशिवासर प्रेम लयो ज्वइ

भीजै। मैं विषया बश नाथ सदा जन जानि स्वभक्ति कृपा करि दीजै॥ सूर्य्यस्तुति हरिगीतिका छंद॥ जै राम जब ते बंश हमरे जन्म करि करुणा लयो। बिस्तार पावन सुयश तिहुँपुर तोष बड़ तब तें भयो॥ भगवन्त करि अब नाथ दाया भक्ति आपनि दीजिये। चिरजीव जोरी चारु संतन प्रेमरस हम भीजिये॥ अग्निस्तुति सवैया॥ भ्राजत राज तिहूँ पुरमें रघुराज समाज स आज तिहारो। संतत संतन देवन के हितकारक वेद पुराण पुकारो॥ खण्डनकै खल वृन्दन भूमि विमण्डनकै दुखद्वन्द्वन टारो। जै जय जै भगवन्त सदा रघुवंश बिभूषण राम उदारो॥ मरुतस्तुति किरीट छंद॥ भूप शिरोमणि चक्रवती अवधेन्द्र कुमार प्रशंसन लायक। व्यापक ब्रह्म चराचर मै अवतार धर्यो महि भार नशायक॥ गावतहै यश पावन वेद अदभ्र सदा सुर संत सहायक॥ जै जय जै भगवन्त सदै प्रणतारति भंजन श्रीरघुनायक॥ भूमिस्तुति सवैया॥ खल कर्मन कुत्सित पातक भार जबै जब मोपर आनि पर्यो। अवतार अनूप अनेकन धारि तबै तब दुष्कृत नाथ हर्यो॥ यश विस्तृत पावन लोक तिहूँ जन रञ्जन भञ्जन शोक कर्यो। भगवन्त प्रशंस करौं प्रभु क्यों तुम सों प्रभु और न जन्म धर्यो॥ वेदस्तुति सवैया॥ रघुनायक नायक देवनके नहिं पावत योगिन यत्नकरे। पचिहारि अनेक विरक्तगये नित ध्यावत शंकर ध्यानधरे॥ स्वइ राघव पाणिगहे कपि भालु स्वइच्छित बोलत भागभरे। भगवन्त सुजैजय नाथ त्वया चरिताद्भुत जाल जितेवगरे॥ त्रोटक छन्द॥ जय रामकृपा सुखधामहरे। सवरूप अनूप न भूपपरे॥ भुजदण्ड प्रचण्ड प्रचारिहने। दशकन्धर आदि सदुष्टघने॥ अवतार नृधारि भुभारहर्यो। यशपावन लोक तिहूँ बगर्यो॥ प्रणतारतिभंजन रामनमो। सह शक्ति

सुसेवक जानिक्षमो ॥ रज राउर दुस्तर कौनतरै । नरनाग सुरासुर जौनहरै ॥ करुणाकरि आपु लखे जिनहीं । भवसिन्धु अगाधतरे तिनहीं ॥ भव दुःखनिकन्दन नामजदा । कुरु त्रातुमया स्वइ राम सदा ॥ सुररञ्जन भंजन भारमही । रघुनाथ अनाथन नाथसही ॥

दो॰ चरणकमल अनपावनी भक्तिदेहु जगदीश।
भाग्यवन्त करजोरिकै नाथ नवावों शीश॥

नारदस्तुति नगस्स्वरूपिका छन्द ॥ नमामि राम नागरं। कृपा सुशील सागरं॥ भवाब्धि घोर तारणं।त्रिताप पापहारणं॥ समस्त विश्वपालनं। सुरारि बृन्द घालनं॥ स्वभक्ति चारु दीजिये। कृपा कटाक्ष कीजिये ॥ शारदस्तुति छप्पै ॥ जैजै श्रीरघुवीरधीर त्रि-भुवनहितकारी। राजबंश अवतंस चरित अद्भुत भयहारी ॥ सेवत सुलभ उदार भक्तवत्सल गुणरासी । पूरणब्रह्म समान सदा अग जगमें बासी ॥ निज भक्तहेत धरि विविधतनु करत कठिन संकट शमन। यश गायगाय नर भवतरत जयजै श्रीसीतारमन ॥

दो॰ यहिविधि सुरनरमुनि सबन प्रभुसन अस्तुतिकीन।
भाग्यवन्त अनपावनी भक्तिमाँगि बरुलीन॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेउत्तरकांडे श्रीसीतारामचन्द्रराज्याभिषेकसुरमुनिआदिस्तुतिवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

सवैया॥ सुन्दर श्यामशरीर सुहावन पावनपुंज लजावन मैना। चारु सुचीर विभूषण मंजुल अंगन अंग सजैं छबिऐना ॥ राजत राजसिंहासनपै रघुनायक दायक दासन चैना । बन्दतहै कर स-म्पुटके भगवन्त ससीय श्रिराजिवनैना ॥ राजत रामसिंहासनपैं सुखमा भगवन्त न सों कहिजाती । आनँदमंगल छायरह्यो पुर बाजि निशान रहे बहुभाँती ॥ नाकनटी बहु नाचकरैं गुण किन्नर

गावतहैं दिनराती । याचकपाय सुदान अशीशत जातनहीं उर मोद समाती ॥

दो० यहि आनन्दसमेत सब गये मास षटबीति।
तब रघुपति निज सखनसन बोले वचनसप्रीति ॥

सवैया॥ हे नल नील सुऋक्षपते युवराज विभीषण वानरनाहू। काजकियो तुम मोरबड़ो क्यहिभाँति करौं भगवन्त सराहू॥ भारत आदि सु भ्रातन ते बहु प्रीतम मोहिं सबै तुम आहू। संतत मोहिं सप्रेम भज्यो सह क्षेम सबै अब मंदिर आहू ॥

दो० सुनि प्रभु वचन सनेह रस भये मगन कपिवृन्द।
रहे निरखि यकटक सकल रामचन्द मुखचन्द ॥

देखि प्रीति अति राम कृपाला। भूषण बसन विचित्र विशाला ॥ भांति भांति बहु मोल मँगाये। निजकर भरत सबन पहिराये ॥ भये मुदित मन सुख न समाई। तब रघुपति लिय सबनबुलाई ॥ अति सादर समीप बैठारी। मुनि प्रति राम बचन उचारी ॥

दिग्पाल छंद ॥ एताव शैलवासी नल नील बंधु दोऊ। बुधिवन्तबीर बांके सुनु काज कीन जोऊ॥ इन सिंधु सेतु बांधे दशकंठ शीश फारे। संग्राम शत्रुभारी बहु खोजि खोजि मारे॥ मुनि राज काज मेरे इन देह गेह त्यागे । भरतादि बंधुहूते बहु मोहिं प्रिय लागे॥ ये बालिबंधु ज्ञानी सुग्रीव नाम याको। किष्किन्धा राजधानी कपिराज वीर बांको॥ बहु यंत्र मंत्र जानै सँग सेन भूरिबांकी। करवाय शोध सीतै रण युद्ध कीन हांकी॥ मुनिराज काज मेरे इन देह गेह त्यागे। भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहिं प्रियलागे॥ ये बालि पुत्र ज्ञानी है.अंगद नाम याको। यशवन्त बुद्धिराशी बलवन्तवीर बांको ॥ दशकण्ठ सभाजाई पगरोपि मान भंज्यो। दहि लंकभवन

दीन्हें रण शत्रु भूरि गंज्यो ॥ मुनि राज काज मेरे इन देह गेह त्यागे। भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहिं प्रिय लागे॥ ये ऋक्षराज शूरो जामवन्त नाम जानी। दलपुंज संग याके बुधिवन्त बीर मानी॥ रिपु लात घात पार्यो रणभूमि छोरिलीन्हें। घननाद मान तूर्यो बहु दुष्ट घात कीन्हें॥ मुनि राज काज मेरे इन देह गेह त्यागे। भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहिं प्रिय लागे॥ ये राक्षस कुल माहीं दशकण्ठ बन्धु शूरो। है बिभीषण नाम याको यशवन्त भक्तरूरो॥ तजि बन्धु आनि मोहीं मिलिकाज भूरि कीन्हें। दर्शाय मीचु रिपु की कहि वैद्य नाम दीन्हें॥ मुनि राज काज मेरे इन देह गेह त्यागे। भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहिं प्रिय लागे॥ ये पवनपुत्र नामी हनुमान नाम याको। मिलवाय मोहिं दीन्हें कपिराज बीरबांको॥ मुख मेलि मुद्रिका लै तरि सिंधुपार जाई। पुर जारि मारि अक्षै सुधि सीय बेगिलाई॥ सौमित्र दुःख मेट्यो गिरिद्रोण रैनि लायो। करि युद्ध क्रुद्ध भारी रिपु सैन मारि दाँयो॥ मुनिराज काज मेरे इन देह गेह त्यागे। भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहिं प्रियलागे॥

दो०. कपि समाजके गुण अमित बरणि पार नहिंहोहिं।
प्राण सरिस मुनिराज ये संततहैं प्रिय मोहिं॥

सुनि प्रभु बचन हरषि मुनि नाहू। पुनि उठिमिले मुदित सबकाहू॥
तब रघुपति सबहिन सनमानी। बिदाकीन कहिकहि मृदुबानी॥
उर धरि राम रूप प्रभुताई। चले सकल चरणन शिरनाई॥
तब अंगद प्रभु पद शिर नायो। जोरि पाणि मृदुबचन सुनायो॥

कुंडलिया॥ कहा हमारो काजहै प्रभु तजि कहियो गेह। तुम सर्वज्ञ कृपायतन जानहु शील सनेह॥ जानहु शीलसनेह मरण अवसर, मोहिंबाली। करुणासिंधु कृपालु गयो कोंछे तबघाली॥

घालि सकल दुख दोष किह्यो प्रतिपाल महाहै। तुम तजि दीनदयाल काज ममगेह कहा है॥ राखिय शरण कृपायतन म्वहिंजनि त्यागौ नाथ। दीनबंधु दाया सदन बिनै करौं धरि माथ॥ बिनैकरौं धरि माथ टहल गृहकी लघु करिहौं। प्रभु पद पंकज देखि अगम बारिधि भव तरिहौं॥ हौं बालक अज्ञान बिनय कैसे प्रभु भाखिय। भाग्यवन्त जन जानि शरण पंकज पद राखिय॥ कीन्ह्यो अंगद बहुबिनै बार बार शिरनाय। देखि प्रीति रघुबंशमणि लीन्ह्यो हृदय लगाय॥ लीन्ह्यो हृदय लगाय माल निज उर पहिरायो। सजल नैन मृदुबैन राम बहुबिधि समुझायो॥ समुझायहु बहुभाँति चल्यो चरणन चितु दीन्ह्यो। बार बार उरलाय बिदा रघुपति कपिकीन्ह्यो॥

दो० भरत लषण रिपुहन अनुज सहित संग हनुमान।
सकलकपिन कहँपठय फिरि आये जहँभगवान॥
तब रघुबीर निषाद कहँ दीन्ह्यो बोलि निदेश।
जाहु सखागृह आपने आवत रह्यो हमेश॥
सुनि प्रभुबचन सप्रेम गुह बहुबिधि बिनयसुनाय।
चरण कमल उर राखिकै चल्यो भवन शिरनाय॥
प्रभु चरित्र सुंदर सुखद देखि देखि पुर लोग।
कहहिं धन्य हम भागबड़ जो यह भयो सँयोग॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे उत्तरकाण्डेश्रीरामचन्द्रवशिष्ठप्रतिकपिसमाजप्रशंसासुग्रीवादिनिजभवनगमनवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

दो० बंदौं श्री सीता रमण शमन पाप संताप।
भाग्यवन्त तिहुँलोक में जाको बिदित प्रताप॥

यहिबिधि राम सकल सुखदाता। राजहिं सभासहित लघुभ्राता॥
श्यामलगात सुभग सब अङ्गा। लाजहिंछबिलखिकोटिअनङ्गा॥

पीतबसन द्युति तड़ित लजावन। भूषणविविध सुदेश सुहावन॥
चरणकमल शुभ चिह्न सुहाये। मुनि मन भृंग रहत जहँ छाये॥
कटि किंकिणी मनोहर सोहै। सुनिरव मधुर मदन मन मोहै॥
नाभी रुचिर उदर अतिभ्राजा। उर आयत मणिमाल बिराजा॥
केहरि कंध दंड भुजभारी। अङ्गदादि भूषण बहुधारी॥
कर धनुबाण सुभग दर ग्रीवाँ। आनन चन्द्र अमल छविसीवाँ॥

दो० वारिज लोचन गोल सुठि सोहत अमल कपोल।
चारु चिबुक रद अधर शुचि हरतहृदय मृदुबोल॥

कानन कुंडल सोहहिं लोला। नाकबुलाक सुछबि अनमोला॥
चितवनि चारु चितै मन हारी। भृकुटी बंक अलक छबिकारी॥
मृग मद तिलक सोह बर भाला। हेमकीट शिर परम बिशाला॥
नख शिख रूप अनूप बिराजै। देखत काम कोटि शतलाजै॥
निरखहिं छबि सादर सब भाई। होहिं मुदित जीवन फलपाई॥

दो० राम रूप शोभा अमित बरणि सकै नहिं शेख।
भाग्यवंत लघु बुद्धि मैं करौं कवनबिधि लेख॥

सवैया॥ रामप्रताप उदै रबिसों अघओघ महातम पुंजनशाने। सज्जनं संत सरोज खिले खल लम्पट कैरवसों मुरझाने॥ धर्ममलिंद उड़े सब ठाँय अधर्म उलूक समाजलुकाने। भक्तनकोक अनंदलह्यो भगवंत विशोक बसे सुरथाने॥ राम कि राज सुखी सब लोक मिटे दुखदारिद दोष त्रितापा। पूरिरह्यो जग धर्ममई बचमानसकर्म नहीं कहुँ पापा॥ बैर बिहाय चरैं मृग कानन निर्भयसाधु करैं तपजापा। काहुहिं लेश कलेश नहीं भगवंत उदै रबि रामप्रतापा॥ कामदरूप भई बसुधा सुखसंपति छायरह्यो सब ठांई। दारुण दम्भ दुकाल गयो तजि चाल कुचाल सुचाल चलाई॥ धार

अमी सरितान सवै मणि आकरहैं गिरि संकुल जाई। कोशलराज समाज बिभौ भगवंत सकै न अहीशहु गाई ॥

दो॰ रामराज सुख सम्पदा रह्यो सकल जग छाय।
चारिहुबर्ण सुधर्म रत रहे राम यश गाय ॥
आनँदमंगल अवधपुर दिनदिन प्रति अधिकाय।
मुदित सकल निज निजभवन बहुबिधि रचेबनाय ॥

कुंडलिया ॥ धवलधाम अभिराम अति कंचनखंभ विशाल। चामीकर मै कलशशुभ धरे दीपमणि जाल ॥ धरे दीपमणिजाल देहरी बिद्रुम सोहै। रचना अमित अनूप देखि मुनिजन मनमोहै॥ मोहै विधि चटपट कुलिश तोरणबर सुखमा लखति। सुरपति सदन न पटतरति धवलधाम अभिराम अति ॥ जातरूप मै रचित अति सोहत पुरबाजार। धनिक बणिक बैठे विविध लैलै वस्तु अपार ॥ लैलै बस्तु अपार पार गनिको त्याहि पावै। देखत बिभुजिन केर धनदमनमाहिं लजावै ॥ जावै जो बिनुबसु तहां लहै वस्तुभावत सुमति। किमि बजार सुखमा कहै जातरूप मै रचित अति ॥ सोहत पुर चहुँ दिशि अमित सुभग बाटिकाबाग। सदासुमनफल सहित द्रुम गुंजत मधुप सराग ॥ गुंजत मधुप सराग उड़त लैलै मकरंदा। करत मुखर खगबृन्द जहां तहँ सहित अनंदा ॥ सहित अनंद बसंत नित रहत जहां निशिदिन रमित। कहि न सकै भगवन्त छबि सोहत पुर चहुँदिशि अमित ॥ पुर उत्तर सरयूसरित सोहत पावनधार। उठत तरंगैं विविधविधि भवँर अवर्त्त अपार ॥ भवँर अवर्त्तअपार घाट सुन्दर सबबाँधे। मणिमय शुभ सोपान पंक कहुँ लखियन राँधे ॥ राँधे पनिघट सुभग बहु करत जहाँ मज्जन बनित। देवालय रंजित तटनि पुर उत्तर सरयूसरित ॥ जाके

दरशनके किहे पाप ताप मिटिजाय। तेहि सरयूबरसरित की को कहै महिमागाय ॥ को कहै महिमागाय प्रेम युत मज्जत प्रानी। रामधाम पथ पाव लहत जो कोउ मुनिज्ञानी।। ज्ञानी मुनिजन बृन्द बासकीन्हे ढिगताके। पियैं सदा शुचिनीर नमैं सन्तत शिरजाके।।

दो० जहँतहँ तुलसीबृन्द बहु लाये सकल मुनीश।
कहिनसकै भगवन्त सो सुखमा गणपअहीश ॥

कवित्त ॥ ठौर ठौर सोहत तड़ाग दिव्य बारि मंजु पूरित विकाश पद्म रंगरंग ह्वैरहे। आसपास चंचरीक भीरभूरि बृन्दबृन्द घूमि घूमि बासनै सुगुंजिगुंजि लैरहे ॥ धारि धारि मोदही मराल भाँति भाँतिनै सुकूजि कूजि पुञ्जपुञ्ज शोर घोरकैरहे । कोकिला चकोर कीर सारिका मयूर चक्र बाटिकान बागमें कलोलनै मचैरहे ॥

दो० पुरशोभा अद्भुत अमित क्यहि विधिकहौं बखानि।
परब्रह्म श्रीरामजी भये भूप जहँ आनि ॥
पुर नर नारि सप्रेम सब करहिं रामगुण गान।
लहहिं परम आनँद निरखि रघुकुल पंकजभान ॥

छप्पै ॥ सेवहिं सादर बन्धु सकल रामहिं दिन राती। राखे रुख नितरहहिं यथा चातक दिशि स्वाती ॥ रामचन्द्र बहुभाँति करहिं भ्रातनपर प्रीती। सिखवहिं तिनहिं सप्रेम सदा सुन्दरविधि नीती॥ प्रभु कहहिं कथा इतिहास बहु सुनहिं सकल मनुलायकै। ब्रह्मादि देव सन्तत सकल नावहिं पद शिरआयकै ॥ विश्वामित्र वशिष्ठ आदि यावत मुनि गुरुजन। जुरहिं सभासद आइ सहित सबमंत्री पुरजन ॥ रामरूप छबिदेखि सकल जीवन फलपावैं । शासनलै सबं लोगसहित मुद भवन सिधावैं॥ नित नारदादि मुनिवरनिकर,

आय आय पायँन नमत। लखि भाग्यवन्त नखशिख सुछबि बहु प्रकार अस्तुतिकरत॥

दो० बहुप्रकार अस्तुति करहिं नावहिं पदरज माथ।
कमलनैन श्रीराम छबि लखि सबहोहिं सनाथ॥
सानुकूल सबपर सदा करहिं कृपा श्रीराम।
सेवहिं पद भगवन्त सब सहित प्रेम बसुयाम॥
रामराज वैभव अमित को कहि पावै पार।
निजसुखहित भगवन्त कछु कहों सुमति अनुसार।

इतिश्रीमद्योध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेउत्तरकांडे श्रीरामराज्योत्सववर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

दो० बन्दौं श्रीरघुवर चरण भवनिधि तारक पोत।
भाग्यवंत सुमिरत जिन्हैं उदय ज्ञानरबि होत॥
द्वैसुत सुन्दर जानकी जाये सब गुण धाम।
सूरबीर बिजयी समर लवकुश पावन नाम॥
पुष्कल तक्षक भरतके भये पुत्र युग आनि।
चित्रकेतु अङ्गद उभय लछमण के सुत जानि॥
सुभुज शत्रुघाती उभै रिपुसूदन सुत पाय।
सब गुणधाम अनूपछबि कहौं कवन बिधिगाय॥
आदि अंत जाके नहीं पावत बेद न पार।
नरतनु धरि भगवन्त सो कृत शुभचरित अपार॥

यक दिन एक श्वान मगमाहीं। बैठो रहे मुदित डर नाहीं॥
बिन अपराध बिप्र यक आई। मार्यो चरण श्वान दुख पाई॥
फिरियादी प्रभु पहँ स्वइ आयो। तुरत राम द्विज बोलि पठायो॥
कह्यो श्वान ते तब सुरनाहा। याको दंड देउँ कहु काहा॥

कह्यो श्वान याको रघुराई। यती बनाइ गयंद चढ़ाई॥
पुर फिराय चहुँ दिशि ते लीजै। शिव मंदिर अधिकारी कीजै॥
सुनि ऐसे कीन्ह्यो जग त्राता। कह्यो श्वान ते पुनि प्रभुबाता॥
यामें कौन दंड यहि भयऊ। तब शिरनाय कहत सो भयऊ॥
पूरुब विप्र जन्म मैं धारा। धान्य गोसाईं के यकबारा॥
खायउँ भयउँ श्वान सो आई। जन्म प्रयंत स्वई यह खाई॥
ह्वै है कौन दशा यहि केरी। सुनि सब मुदित भये तेहि बेरी॥

दो० यक उलूक कर गृद्ध यक लीन्ह्यो भवन छड़ाय।
झगरत दोऊ रामपहँ फिरियादी भे आय॥

पूछ्यो प्रभु काको यह गेहा। कह्यो गृद्ध गृह मेरो येहा॥
कह उलूक प्रभु भवन हमारा। झूठ कहत यह गृद्ध लबारा॥
तब प्रभु पूछ्यो सचिवन पाहीं। कहौ भवन काको यह आही॥
सबहिन भवन उलूक बतायो। तब प्रभु ताको तुरत देवायो॥
पुनि गृद्धहि पूछ्यो जगत्राता। कोतैं अहसि सत्य कहु बाता॥
जो मम राज्य माहिं निरबाधा। कीन्हेसि दंडयोग अपराधा॥
बोला गृद्ध सुनहु जगदीशा। पूर्व जन्मकर मैं अवनीशा॥
ऋषयशाप यह तनु मैं धारा। अब तब दरश भयउ उद्धारा॥

दो० एक विप्रकर सुत मर्‌यो बिनु अवसर दुख दीन।
आय कह्यो सो रामसों आरत बचन अधीन॥

हे प्रभु राज्य आपुके माहीं। होनअनीति चहियअसिनाहीं॥
बिनु अवसर अकालमृतु घेरो। मर्‌यो कवन कारण सुतमेरो॥
सुनि पूंछेउ प्रभु मुनिनबिचारी। कह मुनि नारद सुनहु खरारी॥
शूद्र एक तप करै अपारा। तेहि अघ मर्‌यो सु विप्रकुमारा॥
सुनि बिमान चढ़िकै रघुराई। तुरतहि जात भये तेहि ठाईं॥

देखि ताहि पूंछेउ प्रभुहाला। बोला सो मैं शूद्र कृपाला॥
तब प्रभु तेहि शिरकाटि गिरावा। तुरत विप्र बालक जी आवा॥
यहि बिधिराज्य बैठि रघुनायक। करत चरित त्रिभुवन सुखदायक॥
जो सुनि सादर नर अरुनारी। होहिं परम गति के अधिकारी॥
राम कथा सादर जे गावहिं। तिनके सब दुखदोष नशावहिं॥
हरियश परम मनोहर जानी। कीन्ह्योगाइ सफल निजबानी॥

हरिगीतिका छंद॥ श्रीराम पावन चरित सादर सुनहिं जे नर गावहीं। संसार सिंधु अपार बिनुश्रम पारते नरपावंहीं॥ जपिनाम मे बहु पतित पावन पारगनिको सबलहै। यमनादि कोल किरात गणिका गीध यश विस्तृत अहै॥ प्रभु दीनबन्धु दयाल राघव जानि जन करुणाकरौ। करजोरि बारहिबार अस्तुति भाषि शिर पायँन धरौं॥ कलिकाल कठिन कराल निशि दिन ग्रसित नाना दुखमई। सहिजात नाहिंन बिपति संकुल बिकल मति भोरीभई॥ अब नाथ और उपाय नाहिंन सूझि यक याही परै। बिनु आपुकरुणासिंधु करुणा बिपति नहिं दारुणहरै॥ सो समुझि निजदिशि हेरि रघुपति भक्ति म्वहिं निज दीजिये। भगवंत नाथ बिमुक्त भव के प्रबल फंदन कीजिये॥

दो० राम तुम्हारो शुभ चरित गावत सब पुरलोग।
जो सुनि बिनहिं प्रयासही नाशत भवभयरोग॥
अति उदार अवतार नर धरिकृत चरित अनूप।
जो सुनि सादर नारि नर फिरि न परैं भवकूप॥

पद॥ हति ताडकभस्म सुबाहुहिकै मखराखि सुखी मुनिवृन्द किये। अघमै ऋषिनारि उधारणकै मिथिलापुरकोपुनि पावँदिये॥ दलि शंभु शरासन राजसभा मुख कारिखदै सिय ब्याहि लियें।

नायक गर्व उतारि चले पुर औध महा सुख पूरि हिये ॥ पितु
सु कै मुनिवेष चले वन भक्तन त्रास निकन्दनको। दृग एक सु
सुरराज तनै त्रिशिरादि बधे खरवृन्दनको॥ मृग तारि क्रिया खग
शवरी मिलि नाश किये दुख द्वन्दनको। बधि बालि सुकंठहि
के कपिराज बिमुक्त किये भवफन्दनको॥ सजि वानर भालु चमू च-
ढ़िकै पुर घेरि लियो रिपु रावणको। परिवार सनाश दशाननकै
दिय राज बिभीषण भावनको॥ सहसीय बिमान सवार सु ह्वै किय
गौन सुदेश सुहावनको। सुरसानँद व्योम बिमान चढ़े भगवन्तबदैं
शपावनको॥ मिलि भारतभाय सुखी सब कै भय राजत राज सिं-
हासनपै। सबलोक बिशोक रहैं नितही मन तत्पर नाथ सुशासन
पै॥ प्रसरयो छबिपुंज प्रभाउमहा कहि सो न परै जलजासन पै।
दुख द्वंद निकंद किये सगरे भगवंत कृपा करि दासन पै॥ बल तेज
प्रताप गुणोत्तम धाम प्रभाद्भुत अंग अपार भरौ। करुणाकर दीन
दयाल प्रभो शरणागतपाल सुभायढरौ॥ विरदावलि वेदपुराणकहै
पद ध्यावत दासन त्रास हरौ। भगवंत कृपाकरिकै सियराम सदैं
सु हृदै मम वास करौ॥

दो० श्रीगुरु करुणापाय बल भक्तिशिरोमणि ग्रन्थ।
भाग्यवन्त पूरण कियो सुखद भक्तिको पन्थ॥

हरिपदछन्द॥ वनइससै चौवन शुभ सम्बत भाद्रकृष्ण पदरूगे।
गुरुवासर तिथि शुभ्र चतुर्दशि भयो ग्रंथ यह पूरो॥ श्रीरघुनंदनकृ-
पारावरी रच्यों ग्रन्थ यह जोई। अर्पतहौं अब नाथ आपुको करौ
गृहण प्रभु सोई॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहबर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणि
ग्रन्थे समाप्तिमगात्॥